ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

जून, 2014

भारत की आशाओं के केन्द्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी

₹10

पूर्णांक 185

शान्तिधर्मी परिसर में सहदेव समर्पित, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था जीन्द के प्रधान रामफल खटकड़, शान्तिधर्मी के प्रधान सम्पादक चन्द्रभानु आर्य, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र अत्री, महासचिव राजेन्द्र मानव व अशोक कुमार आर्य।

शान्तिधर्मी परिसर में आयोजित पूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर यज्ञ करते हुए श्रद्धालु।

एडवोकेट जगरूप सिंह तंवर के सुपुत्र प्राध्यापक अमनदीप सिंह का शुभ विवाह संस्कार २६ मई को ग्राम बाडोपट्टी जिला हिसार निवासी श्री गंगाराम टाक की सुपुत्री ज्योतिबाला के संग पूर्ण वैदिक रीति से बिना दहेज के सम्पन्न हुआ। नवदम्पती को सुखी गृहस्थ के लिए शुभकामनाएं।
श्री जगरूप सिंह ने इस शुभ अवसर पर अपने अनेक सम्बन्धियों को शान्तिधर्मी की आजीवन सदस्यता भेंट की।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

जून २०१४

वर्ष : १६ अंक : ५ ज्येष्ठ २०७१ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३११५, दयानन्दाब्द : १६२

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५६६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य
एक प्रति : १०.०० रु.
वार्षिक : १००.०० रु.
आजीवन : १०००.०० रु.

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जानकर न किया और बुरा जानकर न छोड़ा तो क्या वह चोर के समान नहीं है? -स्वामी दयानन्द

क्या? कहाँ?....

आलेख
शिष्टाचार ८
ऐसे भी हुआ कश्मीर का इस्लामीकरण ६
स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने योद्धा १२
घर को स्वर्ग बनाएँ १४
असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है! १६
सौन्दर्य की परख (कहानी) १७
वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है १६
केवल वेद शास्त्र को जानने से ब्रह्मज्ञान नहीं हो सकता २२
जीवपनोपयोगी फल : जामुन (स्वास्थ्य चर्चा) २४
कहानी/प्रसंग : वैमानिकी विद्या (वायुयान संचालन) के प्रवर्त्तक महर्षि भारद्वाज २७, मन ही तीर्थ है-२७, मालिन की देशभक्ति-२८
कविताएँ- १६,
स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६
चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, व्यक्तित्त्व निर्माण-८,
बाल वाटिका २६, भजनावली २६, **समाचार सूचनाएँ**

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज।
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः।।१००।।

पूज्य यज्ञ में श्रेष्ठ तुम्हीं हो, दिव्य गुणों को दो हमको।
देवों की प्रिय संगति से तुम देव! सदा चमको दमको।।
होता मन्द्र[1] गभीर मधुर हो, छिद्ररहित शोभा पाते।
दोषविहीन हमें भी कर दो, अपने सेवक के नाते।।

पदार्थ : १=गम्भीर, मधुर गौरव युक्त

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

संस्क ति में ही विकास है

❑चन्द्रभानु आर्य

नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्त्व में नई सरकार बनी है। देश में नई आशाओं का संचार हुआ है। लोकतंत्र के इतिहास में संभवतः यह पहला अवसर है, जब लोगों ने जातिवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर देश के लिए वोट किया है। लोगों की आशाएँ और अपेक्षाएँ बहुत ज्यादा हैं। और निश्चय ही यह नरेन्द्र मोदी जी के लिए बड़ी चुनौती है कि जिन निराशा की स्थितियों में देश ने उन्हें अपना नेता चुना है, वे उस निराशा को दूर करने में सक्षम हों। अपनी सांस्कृतिक विरासत से प्रेम करने वालों के लिए उनका नेतृत्त्व सन्तोष का विषय है, क्योंकि इस देश की समृद्ध विरासत में ही इस देश का सम्पूर्ण हित और विकास निहित है। नरेन्द्र भाई उस वातावरण में पले बढ़े हैं, जहाँ इस देश की समृद्ध परम्पराओं के महत्त्व को समझा जाता है। इसलिए उनसे यह अपेक्षा तो सभी की होनी चाहिए कि वे उन श्रेष्ठ परम्पराओं की रक्षा करेंगे जो पिछले दिनों में, विशेष कर के आजादी के बाद से विलुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं। संस्कृत और वेदविद्या के पठन-पाठन और अनुसंधान के लिए कुछ किया जाएगा, देश के वास्तविक इतिहास को पढ़ाया जाएगा, परम्परागत शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन दिया जाएगा, सारे देश को वैधानिक और वास्तविक रूप में एक सूत्र में बांधा जाएगा, भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाएगा-- ये और इस प्रकार की अनेक आशाएँ नई सरकार से की जानी चाहिएँ, इसके लिए चाहे कितना भी समय लगे। आन्तरिक और बाहरी सुरक्षा, विदेशों से 'आँखों में आँखें डालकर बात करना' इन विषयों पर मोदी जी ने जनता को भरोसा दिलाया है, और वे इनको पूरा करेंगे।

आर्थिक विकास, महंगाई आदि ऐसे विषय हैं, जिनसे जनता सर्वाधिक प्रभावित और त्रस्त है। ऐसे में कुछ लोगों को परम्परा, संस्कृति और विरासत की बात करना बुरा लग सकता है। पर वास्तव में इस देश का आर्थिक विकास भी परम्परा में ही निहित है। परम्परा और संस्कृति के बिना आर्थिक विकास की बात दिवास्वप्न की तरह है। वस्तुतः आजादी के बाद विकास के नाम पर देश के लोगों को छला गया है। मैं नीयत की बात नहीं करता, पर यह अवश्य है कि देश के नीति निर्माताओं के मन में अपनी परम्पराओं के प्रति हीन भावना अवश्य थी।

महर्षि दयानन्द ने कहा- कृषक राजाओं के भी राजा हैं। महात्मा गांधी ने कहा- भारत गांवों में बसता है। हमारी परम्परा में गांव एक सामाजिक ही नहीं, आर्थिक ईकाई भी थी, जो पूर्ण रूप से स्वावलम्बी थी, जिसमें कारीगर भी थे, उत्पादक भी थे। जब अंग्रेजों ने इस देश के कच्चे माल को नाममात्र के दामों में खरीदना और मानचैस्टर से लाकर पक्के माल को मुंह मांगे दामों में बेचना शुरु कर दिया तो देश ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई थी। हमारे कारीगर नष्ट कर दिये थे। वही नीति देश की आजादी के बाद भी जारी रही। आज गांव की आर्थिक ईकाई नष्ट हो चुकी है। गांव के कपड़ा, चमड़ा, मिट्टी, लकड़ी, लोहा, आभूषण, गुड़ उद्योग बंद हो चुके हैं। गांव का मजदूर मजदूरी करने के लिए शहर जाता है। गांव का कृषक बीज खाद लेने के लिए शहर जाता है। गांव का पशुपालक शहर से घी खरीदता है। विकास के नाम पर हमारा स्वाभिमान भी नष्ट हो गया और स्वावलम्बन भी। स्वरोजगार समाप्त होने से नौकरी चाहने वालों की लम्बी लाईन लग गई।

देश के आर्थिक विकास का अर्थ है देश की बहुसंख्यक जनता का आर्थिक विकास। भारत गांवों में बसता है और भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि है। एक सीधा सा सवाल है कि जब आजादी के बाद देश में अन्न का उत्पादन बढ़ा है तो इतनी महंगाई क्यों बढ़ी है? जिस अनुपात में कृषि की लागत बढ़ी है, उस अनुपात में कृषक की आय नहीं बढ़ी है, जिस अनुपात में अन्न के मूल्य बढ़े हैं, उस अनुपात में श्रमिक की आय नहीं बढ़ी है। कृषक की आय बढ़ नहीं रही, श्रमिक को खाने को अन्न नहीं मिल रहा! आखिर इस उत्पादन को खा कौन रहा है? और यह विकास किसके लिए हो रहा है?

वस्तुतः कृषि का विकास हमारी परम्परा में निहित है। कृषि को अरब देशों के तेल से चलने वाली मशीनें और सरकारी कारखानों में बनने वाली खाद नहीं चाहिए, कृषि को गाय चाहिए। जब से कृषक गाय से दूर हुआ है, तभी से वह अभाव के कारण आत्महत्या करने को विवश हुआ है। गाय को काट डाला, मार डाला, डब्बों में बंद कर करके विदेशियों को खिला दिया गया, जैसे कृषक का हाथ कट गया। गाय के मामले को धार्मिक और साम्प्रदायिक मामला बनाकर उलझा दिया गया।

वस्तुतः हमारी परम्परा का कोई भी धार्मिक मामला आर्थिक मामला भी है, सामाजिक भी और राष्ट्रीय भी। स्वामी दयानन्द ने विशुद्ध आर्थिक रूप से गाय की उपयोगिता का गणितीय आकलन किया है। एक गाय अपने जीवन में

२५७४० लोगों का पेट भर सकती है। यह गणना केवल दूध और उससे बने पदार्थों की है। गाय के गोबर से जो खाद बनती है, और गाय के बछड़े जो हल चलाते हैं, उनका गणित लगाया जाए तो गाय अकल्पनीय उपकार करती है। गाय का गोबर भारतीय भूमि के लिए सर्वोत्तम खाद है और सर्वोत्तम कीटनाशक भी। विषैली तथा महंगी खाद समय पर नहीं मिलती, भूमि की उर्वरा शक्ति को नष्ट करती है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में गोवंश के विकास के लिए बहुत अच्छा अनुसंधान कार्य हो रहा है। अभी हाल ही में यहाँ 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया। इसमें अमरावती से पधारे कृषि वैज्ञानिक सुभाष पालेकर ने बताया कि किस प्रकार किसान प्राकृतिक खेती अपनाकर समृद्ध बन सकते हैं। पालेकर ने जानकारी दी कि किसान एक देसी गाय के गोबर व मूत्र से २५ एकड़ भूमि में बिना किसी अतिरिक्त खर्च के खेती कर सकते हैं। एक विदेशी नस्ल की गाय के गोबर में ७८ लाख जीवाणु होते हैं जबकि देसी गाय के गोबर में जीवाणुओं की संख्या तीन करोड़ होती है। उन्होंने बताया कि कृषि के लिए गाय के गोबर से बड़ी कोई चीज इस संसार में नहीं है। इसमें भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ साथ रोगों के निवारण की भी अपार शक्ति है। गाय के गोबर की खाद में कृषि में सहायक जीवांश विद्यमान रहते हैं। यदि किसान कृषि के साथ गोपालन भी करेंगे तो निश्चित रूप से अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे।

प्राकृतिक खेती में न तो रासायनिक खाद की आवश्यकता होती है और न कीटनाशकों की। कृत्रिम खेती ने हमारी प्राकृतिक खेती मार डाली, रासायनिक खाद ने देसी खाद को रास्ते से हटा दिया। कीटनाशकों ने हमारे प्राकृतिक कीटनाशक पक्षी मार डाले-- देश का सबसे बड़ा व्यवसाय पराधीन हो गया और कर्ज में दबा किसान आत्महत्या करने को विवश हो रहा है।

आर्थिक विकास के लिए परम्परा को सम्मान और समुचित स्थान देना ही सर्वोत्तम विकल्प है। इस पर भी आर्थिक विकास देश की प्रगति का लक्षण मात्र है, विकास का मूल तो विद्या का विकास है, चरित्र का विकास है, राष्ट्रीय स्वाभिमान का विकास है। आशा है नरेन्द्र मोदी जी अपने संस्कारों की पृष्ठभूमि में अपने संकल्पों को पूर्ण करने में सक्षम होंगे। परमात्मा उन्हें शक्ति प्रदान करे।

आपकी सम्मतियाँ

मुखपृष्ठ की स्मरणीय तस्वीरों के लिए कृतज्ञ हैं पाठक। शांतिप्रवाह में मार्गदर्शक बौद्धिक पलटी मारी गई है। अपने आत्मा और शरीर के बारे में इतना ना सोचें कि जनकल्याण के लिए देर हो जाए। जन कल्याण त्याग मांगता है और यही त्याग आत्मबल बनता है। १५ वर्ष की आयु में नेताजी के विचारों से (जनवरी अंक) बूढ़े पाठक प्रभावित हुए। गांधी नेहरू उन्हें टिकने देते तो आज भारत का नक्शा कुछ और ही होता। पृष्ठ १५ क्रांतिकारी की नैतिकता को प्रणाम! आज के शासकों के बेटे बलात्कार के उपरांत अपनी दादी/ माँ की गोद में जा छुपते हैं, पुलिस भी साथ देती है। गदर पार्टी के जांबाजों को पाठक सलाम करते हैं, पर सरकार ने उन्हें आजादी के सेनानी ही नहीं माना। स्वास्थ्य चर्चा के दो पन्ने जैसे चलती फिरती आयुवैदिक डिस्पैंसरी हैं। बाल वाटिका की पठन सामग्री से अधिकांश बालिग पाठक लाभ बटोरते हैं। भजनावली के आठ पैरे एक महान नीति ग्रंथ हैं। कश्मीर वह कांटा है जो नेहरूजी ने बोया था।

धर्मसिंह गुलाटी

५४/१३, शक्ति नगर, पटियाला-१४७००५ (पंजाब)

मई के अंक में कहानी 'देवी मैया का प्रकोप' ने बहुत प्रभावित किया। समाज के पाखण्डी लोगों की धार्मिक भावनाओं का कैसे लाभ उठाते हैं, उन्हें डराकर अपना उल्लू सीधा करते हैं, इस पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला गया है। बाल वाटिका के प्रेरक प्रसंग भी बहुत शिक्षाप्रद हैं।

बिन्दू खन्ना

ग्राम पोस्ट नाड़ा, जिला हिसार

✉ ✉

मई के शांतिप्रवाह में एक बड़ी समस्या पर मनो वैज्ञानिक तरीके से प्रकाश डाला गया है। आज परमात्मा की उपासना के अभाव में लोगों के अन्दर से धैर्य समाप्त हो रहा है। सहनशीलता की कमी के कारण जब व्यक्ति के मन की बात पूरी नहीं होती तो उसे निराशा के सिवा कुछ नहीं दिखता और वह आत्महत्या जैसा मूर्खतापूर्ण कदम उठा लेता है। जबकि जीवन में आशाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं। नैतिक शिक्षा के अभाव में हम उसकी तो चिन्ता करते हैं जो हमारे पास नहीं है, पर जो हमारे पास है उसके बारे में सोचते भी नहीं। धन कमाया जा सकता है, पर जीवन दुबारा नहीं मिल सकता। शांतिधर्मी के इस अंक में प्रकाशित अन्य रचनाएँ भी प्रेरक और ज्ञानवर्धक हैं।

हेमन्त सोनी

नीमराणा, जिला अलवर, राजस्थान

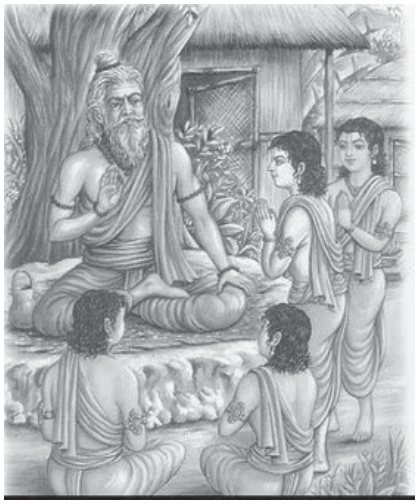

सोम सरोवर (तृतीय खण्ड)

गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

❑पं० चमूपति जी

ढके हुए समुद्र

स पवस्व य आविथेन्द्र वृत्राय हन्तवे।
वव्रिवांसं महीरपः।।८।।

ऋषि :- अमहीयु-पृथ्वी की नहीं, द्युलोक की उड़ान लेने वाला।

(यः) जिस संजीवन रस ने (महीः अपः) धार्मिकता के बड़े-बड़े प्रवाहों को (वव्रिवांसम्) रोक रखने वाले-आवरणों में लिए हुए (इन्द्रम्) इन्द्रियों के राजा की (वृत्राय हन्तवे) आवरणों को हटाने में (आविथ) सहायता दी थी। (सः) ऐ वह संजीवन-रस की धार! (पवस्व) तू फिर प्रवाहित हो।

आत्मा इन्द्र है- इन्द्रिय-पुरी का राजा है। शरीर इसकी राजधानी है। इसमें सब प्रकार की सम्पत्ति-सब प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि विद्यमान है। कोई रस नहीं, कोई वैभव नहीं, जिसका सामान इस नवद्वार की नगरी में न किया गया हो। संयम-पूर्वक भोग करे तो जहाँ आत्मा की अपनी भोग की शक्ति स्थिर रहती है, वहाँ भोग की सामग्री भी इसे दिल खोल कर आनन्द देती है। जहाँ शरीर ने संयम छोड़ा, वहाँ इसका यह दिव्य स्वर्ग झट नरक बन जाता है। आत्मा शक्ति-हीन हो जाती है।

भोग रोग का रूप धारण कर लेता है। विलासी को विलास में भी तो आनन्द नहीं आता है। किसी ने सच कहा है- भौतिक भोगों को भोगने के लिए भी योग की आवश्यकता है।

सांसारिक भोग-विलास तो एक आवरण है। भौतिक जीवन का रस एक पर्दा-सा है, जिसकी ओट में आध्यात्मिक आनन्द की गंगा बह रही है। सोम-संजीवनी आत्मा के अपने अन्दर है। चेतना की इस छोटी-सी अणु मात्र चिनगारी में आनन्द के प्रवाह रुक रहे हैं। अनन्त प्रवाहों का स्रोत स्वयं मानो मरुस्थल में खड़ा प्यास से दम तोड़ रहा है। श्रद्धा का समुद्र श्रद्धा से खाली है। भक्ति का भण्डार भक्ति से शून्य है। मानव जाति का इतिहास इस प्रकार के, शुष्कता के युगों की एक लम्बी कहानी है। मानव समाज का आत्मा वृत्र के -भोग के आवरण के- वश में होता है। जब इसे घने-घने पर्दे ढक रहे होते हैं,- जब लोक-लाज, उल्टे रीति रिवाज रस-रहित क्रिया-कलाप, सत्पुरुषों को सन्मार्ग से हटा रहे होते हैं, उस घोर अनावृष्टि की दशा में किसी दिव्य कोण से भक्ति की बदली उठती है। उसकी पहिली ही बूंद मुख में पड़ते ही प्यासे चातक का हृदय उमड़ पड़ता है। फिर लोक-लाज के, उलटे रीति-रिवाज के सभी वृत्र नष्ट हो जाते हैं। धर्म का एक प्रवाह-सा बह निकलता है।

धर्म-मेघ! आओ! वही प्रवाह बहाओ! हमारे स्तब्ध हृदयों को स्फूर्ति प्रदान करो। हम इस नवयुग का दर्शन करें। देहपुरी का राजा फिर से राजा ही हो। वह अपनी स्वराज्य-शक्ति को पहिचाने। उसका उपयोग करे। ज्ञान-गंगा में नहाये। सारे संसार को उसमें स्नान कराये।

चाणक्य-नीति

षष्ठः अध्यायः

(क्रमागत)

सुश्रान्तोऽपि वहेद् भारं शीतोष्णं न च पश्यति।
सन्तुष्टश्चरते नित्यं त्रीणि शिक्षेच्च गर्दभात्।।२०।।

गधे से ये तीन शिक्षाएँ ग्रहण करनी चाहिएँ–

१– अधिक परिश्रम से थका होने पर भी यह बोझ ढोता है। मनुष्य कार्य के प्रति समर्पण गधे से सीखे।

२– गधा सरदी गरमी की परवाह नहीं करता। मनुष्य को भी वातावरण की प्रतिकूलताओं को सहन करने की शक्ति विकसित करनी चाहिए, इसे ही शारीरिक तप कहते हैं।

३– गधा इतना परिश्रम करने पर भी उसे जो मिल जाता है, उसी में सन्तुष्ट रहता है। उसकी कोई विशेष आवश्यकताएँ नहीं होतीं। मनुष्य को भी सन्तुष्ट रहना सीखना चाहिए।

य एतान् विंशति गुणान् चरिष्यति मानवः।
कार्यावस्थासु सर्वासु ह्यजेयः स भविष्यति।।२१।।

जो मनुष्य पशु पक्षियों से इन बीस गुणों को ग्रहण करेगा, वह किसी भी अवस्था में पराजित या असफल नहीं होगा। पिछले श्लोकों में इनकी गणना की गई है। सिंह से एक, बगुले से एक, मुर्गे से चार, कौए से पाँच, कुत्ते से छः और गधे से तीन गुण ग्रहण करने चाहिएँ। जो व्यक्ति इन गुणों को अपना लेता है, वह सब क्षेत्रों में विजय प्राप्त करता है। जिस व्यक्ति में जिज्ञासा है और अपने आप को सब प्रकार से शक्तिशाली बनाने की अभिलाषा है, वह सभी प्राणियों से और जड़ पदार्थों से भी कुछ न कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकता है। सृष्टि का कण कण कुछ न कुछ शिक्षा देता है, बस उसके लिए पिपासा और जिज्ञासा चाहिए। इन पशुओं के ये गुण तो संकेत मात्र हैं, इसी प्रकार अन्य गुण भी ग्रहण करने चाहिएँ।

अमृत वचनावली

❑**डॉ॰ रामभक्त लांगायन** आई ए एस (से॰ नि॰)

जीवः प्रवातेरितपत्रवच्चलो
रवौ यथा रात्रिजलं प्रलीयते।
नरस्तथा मृत्युवशंगतस्सदा
रहस्यववेदी तु भयात्प्रमुच्यते।।१८।।

यह जीवन हवा के झोंके में काँपते हुए पत्तों की तरह है। सुबह के उगते सूरज में जैसे ओस समा जाती है ऐसे ही मौत में तुम समा जाओगे। जिसने यह रहस्य समझ लिया, उसने जिन्दगी का भेद समझ लिया और वह मृत्यु के पाश से मुक्त हो गया।

विषयासक्तमनसः पूर्णता खलु दुर्भरा।
न च्छिद्रबहुलं पात्रमुदकेन प्रपूर्यते।।१९।।

जिस प्रकार छलनी में पानी नहीं ठहर सकता, उसी प्रकार अंहकार, वासना, ईर्ष्या, आसक्ति से भरा जीवन कभी भर नहीं सकता। वह रिक्त रहता है और उपर्युक्त चीजें बढ़ती रहती हैं।

ज्ञानशतकम्

स्वयं कृते मनुष्यस्य सुखदुःखे न चान्यतः।
गुरुः सत्योपदेष्टा स्यान्महादुःखं पराश्रयः।।२०।।

मनुष्य अपने कारण दुःखी व सुखी होता है। सच्चा गुरु वह है जो राह दिखाए, किसी का सहारा न ले। दूसरों के आश्रित होना मनुष्य को गर्त में ढकेलने वाला होता है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्न स भीतं तु मुञ्चति।
मृत्युमालिंग्य निर्मोहोऽमृतत्वं खलु विन्दते।।२१।।

मौत तय है। मौत निश्चित हो गई, जिस दिन पैदा हुए। मौत से तुम लड़े तो मौत ही पाओगे। अगर मौत के साथ जाने को राजी हो गये तो अमृत को उपलब्ध हो जाओगे।

यो नात्मवञ्चको बुद्धो मृत्युं विजयतेतराम्।
ईशेच्छामनुसृत्यैव परमामृतमश्नुते।।२२।।

जो हमेशा सजग रहता है और अपने को धोखा नहीं देता उसे मौत हरा नहीं सकती। जो होश में रहता है और उस विराट् की मरजी से चलता है, वह अमृत को प्राप्त करता है।

शिष्टाचार

❑**नरेंद्र आहूजा विवेक** 502 जी एच 27 सैक्टर 20 पंचकूला मो. 09467608686

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि और धुआं ऊंचाई की ओर जाता है और सभी को लाभान्वित करता है, उसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में शिष्टाचार और त्याग की अग्नि प्रज्वलित करके सद्कर्मों की आहुति देते हुए अपनी कीर्ति को बढ़ा सकता है।

मनुष्य का आचरण एक दर्पण के समान है, जिसमें उसका प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देता है। उसके शिष्टाचार से पता चलता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन। जिस प्रकार एक साफ गिलास में यदि गंदा पानी भर दिया जाये तो भी वह पीने के योग्य नहीं हो सकता, उसी प्रकार सुन्दर शरीर होने के बावजूद यदि मनुष्य का आचरण शिष्ट नहीं है तो वह सम्मान नहीं पा सकता। शिष्टाचार मनुष्य के आंतरिक सौंदर्य का पैमाना है। शास्त्र पढ़कर ज्ञान होने पर भी यदि उस पर आचरण न किया जाये तो उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं, वस्तुत: वह पढ़ा लिखा मूर्ख है। विद्वान वही है जो पढ़े और सुने हुए वेदादि शास्त्रों के अनुकूल शिष्ट आचरण बार-बार लगातार करे। शिष्टाचार केवल किताबों में पढ़कर सपनों में नहीं सीखा जा सकता, उसे तो मनुष्य अपने जीवन में हर बार लगातार करते हुए यथार्थ की कठोर शिलाओं पर घिसकर मूर्त रूप देता है।

शिष्टाचार मनुष्य जीवन का एक अत्यंत आवश्यक अंग है, इसलिए जीवन में प्रगति के लिए इसे धारण करना अत्यंत आवश्यक है। धर्मसूत्र में शिष्ट के लक्षण लिखते हुए कहा गया है-

शिष्टा: खलु विगतमत्सरा:, निरंहकारा: कुम्भीधान्या

अलोलुपा:, दम्भ दर्प लोभ, मोह, क्रोध विवर्जिता:। अर्थात् धर्मसूत्र के अनुसार शिष्ट उन्हें कहते हैं जिनमें ईर्ष्या, अभिमान, धनसंग्रह की इच्छा, लालच, दम्भ, दर्प, लोभ, मोह, क्रोध नहीं होता। मनुष्य के शिष्टाचार से उसके गुणों, शिक्षा, रूचि और सभ्यता का पता चलता है। महान- दार्शनिक देव दयानन्द 'स्वमन्तव्यामंतव्य प्रकाश' में शिष्टाचार और शिष्ट को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- 'शिष्टाचार जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सत्य-असत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है, यही शिष्टाचार है और जो इसको अपने जीवन में करता है वह शिष्ट कहलाता है।' शिष्टाचार मानव द्वारा जीवन में अपनाने योग्य आचरण है। एक सामान्य व्यवहार भी यदि हम जीवन में पालन करें तो शिष्ट बन सकते हैं। जिस प्रकार का व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से अपेक्षित करते हैं, वैसा शिष्ट व्यवहार और आचरण हम स्वयं दूसरों के साथ किया करें।

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि और धुआं ऊंचाई की ओर जाता है और सभी को लाभान्वित करता है, उसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में शिष्टाचार और त्याग की अग्नि प्रज्वलित करके सद्कर्मों की आहुति देते हुए अपनी कीर्ति को बढ़ा सकता है। शिष्टाचार बुरे लक्षणों को नष्ट करता है और इससे कीर्ति और आयु बढ़ती है। केवल शास्त्रों की पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता, जब तक कि उस पढ़े या सुने हुए वेदादि शास्त्रों के ज्ञान को शिष्टाचार के रूप में जीवन में आचरण में न अपना लिया जाये। इसलिए वेद भगवान का आदेश भी है।

सं श्रुतेन गमेमहि। मा श्रुतेन विराधिषी।।

शिष्टाचार के लिए कोई पहले से तैयार राजपथ नहीं है। माता-पिता और आचार्य शिष्टाचार सिखाने के कारखाने हैं, इनसे विद्या पाकर परिस्थिति के अनुसार शिष्ट आचरण करने वाला बालक ही ज्ञानी बनता है। आर्य संस्कृति तो शिष्टाचारियों के उदाहरणों के भरी पड़ी है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण, वर्तमान काल में महर्षि देव दयानन्द सरीखे अनुकरणीय जीवन हमारे सामने हैं। हम यदि इनके जीवन वृतांत से सीख लेकर अपने जीवन में शिष्टाचार के उन गुणों को धारण करके जीवन यापन करते हैं, तो निश्चित रूप से अपने शिष्टाचार के कारण जीवन में सदैव सफल होंगे।

ऐसे भी हुआ कश्मीर का इस्लामीकरण

❑वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

ऋषियों की भूमि कश्मीर, जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता था, और जिस भूमि परवेदों के चिन्तन और अनुसंधान होते थे, वह भूमि आज आतंकवादियों के अत्याचारों से काँप रही है। इसका कारण भारतीय राजनीताओं के स्वार्थ और अदूरदर्शिता तो हैं ही, जिन्होंने कश्मीर को अपना होते हुए भी पराया बना दिया, और उसमें धारा ३७० की फाँस डाल दी, इसका कारण धर्म के ठेकेदारों की संकीर्णता और रूढ़िवादिता भी है, विद्वान् लेखक ने इसी मार्मिक प्रसंग पर प्रकाश डाला है।

जम्मू को छोड़ दें, तो शेष कश्मीर घाटी आज पाकिस्तानी दरिंदों के जबड़ों में फंसकर छटपटा रही है। श्रीनगर कभी भारत की प्राचीन उपासना-पद्धति 'श्रीविद्या' का प्रबल शक्तिपीठ था, जिसके कारण ही अभी तक इस शहर का नाम 'श्रीनगर' ही प्रचलित है। इस शत-प्रतिशत हिन्दू क्षेत्र कश्यपपुरी को 'कंशीर' (कश्मीर) का मुस्लिम बहुल रूप लेने के पीछे जो अनेक कारण हैं-उनको जानने के लिए हमें इतिहास के वे पृष्ठ पलटने होंगे जब वहाँ 'लहर जागीर' का हिन्दू राजा था-रामचन्द्र। आज तो यह अनेक लाल बुझक्कड़ों के लिए अकल्पित ही है कि कश्मीर में रामचन्द्र वाले नाम के भी कोई शासक रहे होंगे। परन्तु यह ऐतिहासिक सत्य है। यह राजा रामचन्द्र कश्मीर के 'लहर' क्षेत्र में सन् १३२० में, अर्थात् आज से कोई ६९४ वर्ष पहले राज्य करता था। उसकी रानी थी-देवीकोटा। परन्तु इस प्रसंग में कैसी अघटित घटना छिपी है कि इन्हीं रामचन्द्र और देवीकोटा की संतान का नाम पड़ा-'हैदर'। कैसी विडम्बना !

रिंचन की चाल

यह कैसे हुआ-वह इतिहास कश्मीर के ही एक संस्कृत कवि जोनराज ने अपनी कृति 'राजतरंगिणी' (द्वितीय) में प्रस्तुत किया है। यह 'राजतरंगिणी' कश्मीरी कवि कल्हण की 'राजतरंगिणी' नहीं समझ लेनी चाहिए-वरन उससे सर्वथा भिन्न ग्रंथ है। जोनराज भी कश्मीरी ही थे और वे 'लहरकोट' (कश्मीर) के राजा रामचन्द्र के समकालीन थे। इसलिए उन्होंने अपने ग्रंथ में लहर के उक्त हिन्दू शासक के विषय में जो कुछ साक्ष्य संजोए हैं, वे उनकी आंखों देखे हैं। कश्मीर के जोजीला परगना के निचले हिस्से में लहरकोट क्षेत्र आता था, रामचन्द्र उसी का ठिकानेदार था और उन दिनों कश्मीर का राजा सूहदेव था। इसका राज्यकाल सन १३०१ से १३२० तक माना जाता है।

इस राजा की लहरकोट के ठिकानेदार रामचन्द्र से कलह चल रही थी-उससे द्वेष बरतता था सूहदेव और किसी भी तरह उसकी स्वतंत्र सत्ता उसे सहन नहीं हो रही थी। उन्हीं दिनों एक भोट सरदार, जिसका नाम रिंचन था, ने राजा सूहदेव और लहरकोट के शासक रामचन्द्र की अनबन का पता लगा लिया और अपनी दुरभिसंधि क्रियान्वित करने लगा। उसने यह चाल चली कि अपने अनेक सैनिक जो भोट ही थे - व्यापार करने के बहाने कश्मीर में घुसा दिये। उन्होंने कश्मीर में आकर अपने को 'व्यापारी' प्रचारित करने में सफलता प्राप्त कर ली। सर्वप्रथम उन तथाकथित भोट व्यापारियों का प्रवेश रामचन्द्र के इलाके लहरकोट (जोजीला परगना) में ही हुआ। उन्होंने वहाँ अपने जासूसी अड्डे कायम कर लिए और धीरे-धीरे हथियारों का भी जखीरा लहरकोट में जमा कर लिया। साथ ही वे व्यापारी बनकर वहाँ के बाजारों में कपड़ा भी बेचते रहे ताकि उनके सैनिक तथा जासूस होने पर पर्दा पड़ा रहे।

रिंचन का उद्देश्य सिर्फ लहरकोट को हथियाने तक ही सीमित नहीं था, वस्तुतः उसकी कुटिल दृष्टि कश्मीर पर थी, परन्तु लहरकोट उस साजिश में बाधक था, क्योंकि वह बीच में पहरे की चौकी की तरह स्थित था, अड़ा था। अतः जब रिंचन ने लहरकोट में बैठे अपने जासूसों से वहाँ के सब भेद प्राप्त कर लिए और प्रचुर शस्त्र-भण्डार जमा कर लिया-तब एक रोज मौका अनुकूल पाकर उसने अपनी फौज लहरकोट पर चढ़ा दी। रामचन्द्र चुप न बैठा-वह भी सेना लेकर मैदान में आ गया और रिंचन का सामना किया। भयंकर युद्ध हुआ, लेकिन जो भी सैनिक छद्मवेश में व्यापारी बनकर लहरकोट की आस्तीनों में फनफना रहे थे, ऐन युद्ध के मौके पर उन्होंने भीतरघात द्वारा लहरकोट की सुरक्षा में पलीता लगा दिया जिससे लहरकोट पतन के कगार पर जा पहुंचा और रामचन्द्र की सेना को

'राजन! आप यह क्या कर रहे हैं! आप मुसलमानों से क्यों डर रहे हैं? राजा तो यहाँ के आप हैं। भोटिया हैं, हिन्दू नहीं हैं, तब कैसे मैं आपको शैव दीक्षा दे सकता हूँ। मैं विवश हूँ।' कैसा दुर्भाग्य कि सबको आत्मसात करके पचा जाने वाला उदार विराट हिन्दू धर्म, किन्तु उसी का एक संकीर्ण रूढ़िवादी पुरोधा उस क्षण कैसी आत्मघाती भूल कर बैठा!

अपार क्षति उठानी पड़ी। स्वयं रामचन्द्र युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

लहरकोट पर यह पहला हमला हुआ। कश्मीर नरेश सूहदेव मूकदर्शक बने रहे और मन ही मन गदगदा गए कि लहरकोट को छीन ले रिंचन, तो रामचन्द्र को सबक मिल जाए। सूहदेव चाहता तो रिंचन का रास्ता रोक सकता था, परन्तु उसने जान-बूझकर उसे आगे लहरकोट तक बढ़ने दिया-सोचा, इसमें मेरा क्या नुकसान?

राष्ट्र-रक्षा और ऐसे युद्ध के मौके पर यह 'मेरे-तेरे' स्वार्थ और परस्पर की फूट विनाश के बीज बोती है। वही हुआ। लहरकोट पहली बार किसी पराये के हाथों में जाकर परवश और पराधीन हुआ। सूहदेव ने भयंकर भूल की। यह न सोचा कि बाहरी हमलावर जब कश्मीर में घुस रहा है तो खुद उसका क्या होगा, पूरा कश्मीर कैसे बचेगा? यों तो पहले से ही धीरे-धीरे रिंचन के काफी सैनिक 'वस्त्र-व्यापारी' बनकर कश्मीर घाटी में डेरा जमा चुके थे और अब वह सैन्य आगे बढ़ रहा था। आखिर उसका निशाना सूहदेव भी बन गया। सूहदेव प्राण बचाने के लिए जंगल में भाग गया और एक पहाड़ी कंदरा में छिप गया। फिर भी रिंचन उसका पीछा कर रहा था। आखिर उसने गुफा से सूहदेव को खींचकर मार डाला। अब रिंचन पूरे कश्मीर का सुलतान था। रामचन्द्र की विधवा रानी देवी कोटा को रिंचन ने जबरदस्ती अपने महल में डाल लिया-वह विवश थी, कुछ न कर सकी।

शाहमेर की कूटनीति!

खैर, यह तो कथा हुई भोट सरदार रिंचन के कश्मीर-प्रवेश और वहाँ अपना कब्जा जमाने की। इसी समय (सन् १३१३) एक मुसलमान नौकरी की तलाश में कश्मीर घाटी में आया। उसका नाम शाहमेर था। नए शासक रिंचन ने उसकी मिन्नत-आरजू से पिघलकर उसे दरबार में रख लिया। आया था शाहमेर रोजी-रोटी की खोज में, लेकिन दरबार में नौकरी मिल जाने के बाद धीरे-धीरे उसने अपनी कूटनीति और छल-छद्म से कश्मीर में अपने समर्थक और शक्ति बढ़ानी शुरू कर दी। और एक दिन फिर वह आया, जब यही शाहमेर कश्मीर के भोट शासक रिंचन पर यहाँ तक हावी हो गया कि उस पर दबाव डालकर सलाह देने लगा- 'तुम अपना पुराना धर्म छोड़ो- उसमें क्या रखा है। नए मजहब इस्लाम से फायदा उठाओ। इसकी रोशनी में आओ और यह हुकूमत - यहाँ की रियाया भी इस्लाम के साए में आकर राहत की सांस ले।' उसका मतलब था कि रिंचन मुसलमान हो जाए तो कश्मीर की तमाम रियाया भी इस्लाम कबूल कर लेगी और अब स्थिति यह थी कि कश्मीर का शासक होकर भी वह अपने ही दरबारी मुस्लिम षड्यंत्रकारी और मक्कार शाहमेर के मुकाबले कमजोर पड़ रहा था-परेशान था। शाहमेर के षड्यंत्र से बचने का जब उसे कोई दूसरा उपाय न सूझा तो वह कश्मीर के तत्कालीन प्रसिद्ध शैव आचार्य देव के पास पहुंचा और उनसे सविनय अनुरोध किया, कहा-'आचार्यवर! कृपा करके आप मुझे अपने शैव मत की दीक्षा प्रदान करें जिससे मैं और मेरी संतानें हिन्दू धर्म में शामिल समझी जा सकें और मुसलमान होने से बच सकें।'

स्पष्ट था कि वह भोट शासक रिंचन अब स्वयं को 'हिन्दू' कहलाने का अभिलाषी-आकांक्षी था और चाहता था कि कश्मीर में हिन्दू राज्य की ही आगे प्रतिष्ठा कायम रहे। लेकिन हाय रे पाखण्ड! हाय री रूढ़िवादिता की जंजीर! शैव आचार्य देव भी उस निगोड़ी के शिकार बन गए। बोले-'राजन! आप यह क्या कर रहे हैं! आप मुसलमानों से क्यों डर रहे हैं? राजा तो यहाँ के आप हैं। भोटिया हैं, हिन्दू नहीं हैं, तब कैसे मैं आपको शैव दीक्षा दे सकता हूँ। मैं विवश हूँ।' कैसा दुर्भाग्य कि सबको आत्मसात करके पचा जाने वाला उदार विराट हिन्दू धर्म, किन्तु उसी का एक संकीर्ण रूढ़िवादी पुरोधा उस क्षण कैसी आत्मघाती भूल कर बैठा! यदि वह रिंचन को हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लेता तो आज का यह जल रहा नंदन-वन कश्मीर मुस्लिम बहुल न होता और न एक रोज कश्मीरी पंडित, गुरु तेग बहादुर के पास यह अरदास लेकर दौड़े जाते- 'हमारे युवकों को कश्मीर में औरंगजेब बलात् मुसलमान बना रहा है। आप हमारे धर्म की रक्षा करिए।' इसी धर्म की रक्षार्थ तो नौवें गुरु तेग बहादुर, भाई मतिदास, भाई दयाला आदि को दिल्ली में अपने प्राणों को उत्सर्ग करना पड़ा था। भाई मतिदास को मुसलमान बनने से इनकार करने पर आरे से चीरा गया था, गुरु तेग बहादुर और भाई दयाला के शिरोच्छेद हुए थे। इन बलिदानों के पीछे कश्मीरी युवकों के धर्म की रक्षा का प्रश्न ही कारण रहा था।

स्वाभाविक था कि रिंचन ने आचार्य देव के इनकार से अपना अपमान समझा। यह बात जब शाहमेर को मालूम हुई तो वह आए दिन रिंचन को कुरेदने लगा। कहने

लगा–'कहिए जनाब आला! देख लिया इन पंडितों को! बरहमनों ने आपको इस काबिल न समझा कि अपना हम–मजहब (समानधर्मी) बना लें हुजूर को! कैसी बेइज्जती की और खुद उसने, जो आपकी रियाया है। अब तौबा करिए इन लोगों से और इनके कुफ्र से। क्यों आप बुत–परस्तों की खुशामद करने गए? छोड़िए उनको। हमारे दीने इस्लाम को देखिये। छोटे–बड़े, अमीर–गरीब सबको इज्जत देता है। रोशनी देता है। सबको गले लगाता है। सबको बराबरी का दर्जा देता है। हमारे दस्तरख्वान पर हर बशर (आदमी) चाहे अदना हो या आला–एक साथ नोश (खाना) फरमाते हैं। हमारे मजहब में किसी से नफरत नहीं की जाती, बशर्ते वह मुसलमान हो! आइए, हमारे साथ आइए। इस्लाम आपको दावत देता है।'

इस्लाम का प्रादुर्भाव

रिंचन तो पंडितों पर चिढ़ा ही था, कुपित था, उन्हें ही सबक सिखाने के लिए शाहमेर की दावत कबूल कर ली। शाहमेर की बाछें खिल गईं कि वह रिंचन को मुसलमान बनाने में कामयाब हो गया। सोचा, अब तो जाहिर है, वादी–ए–कश्मीर में इस्लाम की जड़ जम गई। उसकी बुनियाद यहाँ पुख्ता हो गई। नतीजा यह हुआ कि रिंचन के मुसलमान बन जाने पर रानी देवीकोटा के बेटे का नाम 'हैदर' रखा गया। खुद शाहमेर के दो बच्चों के नाम थे–जमशेद और अल्लेशर। जमशेद को वह 'ज्यंशर' ही पुकारता था और यह साक्षी था कि कभी इस शाहमेर के पुरखे भी जरूर हिन्दू रहे होंगे। अरबी–फारसी का नया जोश चढ़ने पर शाहमेर ने उन बच्चों के घरेलू नाम रखे थे–'स्वाद' और दूसरे का 'नून'। ये दोनों अक्षर फारसी लिपि की वर्णमाला के हैं।

पाठक कहेंगे कि 'अल्लेशर' और 'ज्यंशर' जैसे नामों से हिन्दुत्व का क्या रिश्ता। वस्तुतः उस जमाने में कश्मीर में जो प्रसिद्ध स्थान थे, उनके नाम होते थे–ज्येष्ठेश्वर, त्रिपुरेश्वर, जयापीडपुर आदि। उसी के अनुसार शाहमेर के लड़कों के उक्त नाम थे। 'ज्येष्ठेश्वर' शिव ही हैं। ऐसे ही कश्मीर में एक स्थान 'द्वारेश्वर' था। परन्तु आगे सत्ता में आकर शाहमेर बन गया शम्सुद्दीन (शंसदीन), उसके बच्चे अल्लेश्वर और ज्यंशर हो गए–अलाउद्दीन (अलावेदन) आदि।

आगे यदि रानी देवीकोटा चाहती तो शाहमेर को मरवा डालती। वह समर्थ थी, साहसी थी। पर उसने इस तरफ उपेक्षा भाव रखा। जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि एक रोज जब कश्मीर के प्रधान सेनापति, जो हिन्दू था तथा शाहमेर के बच्चे अल्लेशर (अल्लेश्वर) का श्वसुर था – ने रानी की अवज्ञा की तो देवीकोटा ने उससे युद्ध किया, परन्तु हतभाग्य कि वह कैद कर ली गई। रानी के दो मंत्री हिन्दू थे। उनमें एक का नाम कुमार भट्ट था। उसने अपूर्व कौशल से रानी को कारागार से छुड़ा लिया। अनन्तर शाहमेर ने छल से रानी के दो आदमी–अवतार और भट्ट भिक्षण मरवा दिए।

जोनराज ने लिखा है कि शाहमेर ने उनके खून से स्नान किया। दोनों जहर बुझाये खंजरों से उस समय मारे गये थे जब शाहमेर ने रोगी होने का नाटक रचकर उन्हें अपने पास बुलाया था। ये दोनों रानी के मंत्री थे। रानी अकेली और कमजोर पड़ती गई। शाहमेर अपने को शम्सुद् दीन (शंसदीन) कहलाने लगा। जोनराज लिखता है–

'शंसदीन इत्याख्यामत्यां स्वस्थ व्यथान्नृपः'

(राजतरंगिणी (द्वितीय) ।।३५२।।)

जोनराज ने अपने ग्रंथ में अल्लशेर की हिन्दू पत्नी की बड़ी प्रशंसा की है, लिखा है–

---'लक्ष्मी निवसुतांदधत–अल्लेशो लब्धवान--।''

(राजतरंगिणी (द्वितीय) २९०)

उधर इसके विपरीत शाहमेर ने अपनी बेटी कोटराज नारिंग से ब्याही थी, जो हिन्दू था। यह इसलिए कि शाहमेर की समर्थक–शक्ति बढ़ सके। उसका नाम था, 'गौहर' (गुहर)। शाहमेर के दोनों बेटों की भी बेटियाँ ऐसे घरानों (भार्गिल के सरदार तेलाकशूर और शंकरपुर (बरामूला) के 'लुत्त' या 'लुस्त') को ब्याही थीं जो कभी पहले योगी वभ्रुवाहन के वंशज रहे थे और जो अब नव मुस्लिमों में गिने जाते थे। खुद शाहमेर को जोनराज ने 'राजतरंगिणी' (द्वितीय) में 'पार्थ' का वंशज बताया है। इसी वंश में आगे कुरुशाह और ताहशाह जन्मे। इनमें कुरुशाह के पुत्र ताहशाह को जोनराज ने 'शाहमेर का पिता' लिखा है। इसी शाहमेर की अगली पीढ़ी में कश्मीर का शासक, जो जैनुलआबदीन हुआ– उसे इतिहास में हिन्दू विरोधी न बताकर काफी उदारवादी लिखा गया है।

जो हो, शाहमेर मुसलमान के नाते, खासकर इस्लाम के नाम पर, न सिर्फ कश्मीर को छल–छद्म, हत्या, षड्यंत्र द्वारा इस्लामी झण्डे के नीचे ले गया, वरन इसी प्रपंच–प्रक्रिया में उसने रिंचन, रानी देवीकोटा आदि सभी को धोखा दिया। रिंचन के बाद रानी ही शासिका थी– उसे हटाकर शाहमेर सुलतान बन गया। उसके कठमुल्लेपन और जेहादी जुनून ने ही कश्मीर का जो हिन्दू नक्शा था, हिन्दू रंग था और जिसे भोट सरदार रिंचन भी बदल नहीं सका था, इस्लाम के नाम पर बदरंग, विरूप और विद्रूप बना छोड़ा। (पाञ्चजन्य १० अप्रैल १९९४ से साभार)

स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने योद्धा

❑**राजेशार्य आट्टा,** 1166, कच्चा किला, साढौरा, यमुनानगर-१३३२०४

आजादी की बुनियाद डालने में महावीर सिंह और उन जैसे कितने ही ज्ञात तथा अज्ञात क्रांतिकारियों ने अपना रक्त और मांस गला दिया था। किसी देश में महावीर सिंह जैसे बहादुर देशभक्त और उनके पिता जैसी महान आत्मायें रोज-रोज जन्म नहीं लेती। उनकी यादगार हमारे गौरवपूर्ण इतिहास की पवित्र धरोहर है। क्या हम उसका उचित सम्मान कर रहे हैं?

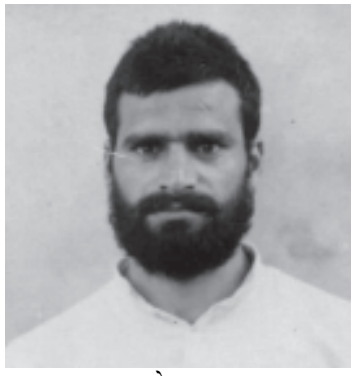

लेखक

प्रिय पाठकवृन्द! एक नौजवान ने अपने पिता को यह कहते हुए, कि यह शादी का चक्कर मेरे क्रांतिकारी जीवन को तबाह कर देगा, अपनी शादी से मना करने हेतु पत्र लिखा था। उसके महान पिता ने पत्र के उतर में जो लिखा, उसे क्रांतिकारी शिववर्मा ने 'संस्मृतियाँ' में उद्धत किया है-

'मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुमने अपना जीवन देश के काम में लगाने का निश्चय किया है। मैं तो समझता था कि हमारे वंश में पूर्वजों का खून अब नहीं रहा और उन्होंने दिल से गुलामी कबूल कर ली है। तुम्हारा पत्र पाकर आज मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझ रहा हूँ।'

'शादी की बात जहाँ चल रही थी, उन्हें आज जवाब लिख दिया है। निश्चिन्त रहो, मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जो तुम्हारे मार्ग का बाधक हो।'

'देश की सेवा का जो मार्ग तुमने चुना है वह बड़ी तपस्या का और बड़ा कठिन काम है। लेकिन जब तुम उस पर चल ही पड़े हो तो पीछे मत मुड़ना, साथियों को धोखा मत देना और अपने बूढ़े पिता के नाम का खयाल रखना। तुम जहाँ भी रहोगे मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।'

तुम्हारा पिता- **देवी सिंह**

राष्ट्र-यज्ञ में इतनी बड़ी आहुति डालने वाला व्यक्ति क्या किसी शहीद से कम है? पिता के आशीर्वाद ने नौजवान महावीर सिंह को दिव्य ऊर्जा से भर दिया। नौजवान वीर माँ की बेड़ियाँ काटने के लिए कॉटों की राह पर चल पड़ा। चन्द्रशेखर आजाद के क्रांति दल में इस वीर ने विशेष भूमिका निभाई। सांडर्स को मारने की योजना को कार्यान्वित करने में महावीर सिंह का भी योगदान था। असेम्बली बम काण्ड के बाद शिववर्मा आदि के साथ इन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। लाहौर जेल में पुलिस व जेल वालों से हर तीसरे-चौथे दिन इनका झगड़ा होता रहता था। तब अपने शारीरिक बल के कारण अन्य साथियों के हिस्से की भी मार झेलने में भगतसिंह, किशोरीलाल, महावीर सिंह, जयदेव कपूर, गया प्रसाद आदि ही आगे रहते थे। शिववर्मा ने लिखा है कि यह मार-पीट हम लोगों में स्थायी मनोरंजन का विषय बन गया था और महावीर सिंह को हम सबसे अधिक तंग करते थे।

जेल अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में क्रांतिकारियों ने अनशन शुरू कर दिया। इसी ऐतिहासिक अनशन में ६३ दिन बाद यतीन्द्रनाथ दास अमर पथ के पथिक बने थे। पहले तो सरकार ने इनकी उपेक्षा की, पर दस दिन बाद नाक द्वारा नली से जबरदस्ती दूध पिलाना शुरू कर दिया। क्रांतिवीरों के विरोध के कारण एक व्यक्ति को काबू करने के लिए दो डॉक्टर, एक जेल का अधिकारी और आठ-दस तगड़े पहलवान कैदी-वार्डरों की आवश्यकता पड़ती थी। ६३ दिनों के अनशन में एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब महावीर सिंह को काबू करने में आधे घण्टे से कम समय लगा हो।

अंग्रेजों की न्याय-व्यवस्था में इन वीरों का विश्वास नहीं था। अतः महावीर सिंह, बी० के० दत, कुन्दनलाल, गया प्रसाद, जितेन्द्रनाथ सान्याल आदि ने अदालत का बहिष्कार कर दिया। केस के अंत में भगतसिंह आदि को फाँसी व महावीर सिंह आदि सात वीरों को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। कुछ समय पंजाब की जेल में रखकर महावीर सिंह आदि को दक्षिण भारत की जेलों में भेज दिया गया।

जब महावीर सिंह व डॉ० गया प्रसाद बेलारी जेल में थे, तो इन्होंने सीने पर कैदी नम्बर की तख्ती लटकाने, टोपी पहनने व परेड़ पर बिस्तरा आदि रखकर खड़े होने से इनकार कर दिया। सत्याग्रहियों पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में इन्होंने हड़ताल कर दी। इन्हें कोठरियों में बन्द कर दिया गया। हर परेड़ के दिन इन्हें पूरी कैदी वर्दी पहनाकर पीछे हाथों में

हथकड़ी पहना दी जाती और चार-पाँच वार्डर एक-एक साथी को परेड़ पर ले जाकर खड़ा करते, पर ये दोनों सुपरिन्टेन्डेंट को आता देखकर बैठ जाते या लेट जाते।

सुपरिन्टेन्डेंट अपने समय का मुक्केबाज था। वह सिपाहियों से उन्हें खड़ा करवाता और फिर दोनों पर दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह मिनट तक मुक्केबाजी का अभ्यास करता। इससे एक बार डॉ० गया प्रसाद ३६ घण्टों तक जेल के अस्पताल में बेहोश पड़े रहे थे, फिर भी उसी सप्ताह परेड़ के दिन उन्हें अपने हिस्से के मुक्के फिर खाने पड़े थे। बेलारी जेल में यह क्रम पूरे डेढ़ साल तक चलता रहा।

एक दिन सुपरिन्टेन्डेंट ने दो वार्डरों को महावीर सिंह को बुलाने का आदेश दिया और आते ही मुक्केबाजी शुरू कर दी। उस दिन महावीर के हाथों में हथकड़ी नहीं थी। उन्होंने एक झटके से अपना दाहिना हाथ छुड़ा लिया और सुपरिंटेन्डेंट के मुँह पर जोर का घूंसा दिया कि उसे दिन में तारे दिखाई दे गये और वह लड़खड़ाकर चार कदम पीछे हट गया। उस दिन से कैदियों पर उसकी मुक्केबाजी तो समाप्त हो गई, पर महावीर सिंह को ३० बेतों की सजा हो गई।

उन्हें टिकटिकी पर बाँधा गया। उनके नंगे नितम्बों पर जोर से बेंत गिरता, खाल उड़ती, ताजे खून के फव्वारे छुटते, पर महावीर सचमुच महावीर था। हर बेंत के बाद 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाता। तीस बेंत पूरे होने के बाद भी सुपरिन्टेन्डेंट की ओर देखकर उसने नारा लगाया। स्ट्रेचर पर लेटने से मना कर यह वीर अपने आप टहलते हुए अपने हाते में चला गया।

जनवरी १९३३ में उन्हें कुछ अन्य साथियों के साथ अण्डमान भेज दिया गया। उस नरक में सम्मानजनक व्यवहार व कुछ सुविधाओं के लिए राजनैतिक बन्दियों ने १२ मई से अनशन शुरू कर दिया। छठे दिन अधिकारियों ने बलपूर्वक दूध पिलाने का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया। आधे घण्टे की कुश्ती के बाद दस-बारह व्यक्तियों ने मिलकर महावीर सिंह को जमीन पर पटक दिया और डॉ० ने एक घुटना उनके सीने पर रखकर नली नाक के अन्दर चला दी। उसने यह भी नहीं देखा कि नली पेट न जाकर फेफड़ों में चली गई है। अपना फर्ज पूरा करने की धुन में पूरा एक सेर दूध फेफडों में भर दिया और उन्हें मछली की तरह छटपटाता हुआ छोड़कर आगे बढ़ गया। कोठरियों में बन्द साथियों ने उसे तड़फता देख शोर मचाया, तो डाक्टर ने वापिस आकर देखा। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहाँ रात के बारह बजे के बाद आजीवन लड़ते रहने वाला महावीर अनन्त में विलीन हो गया। अधिकारियों ने चोरी-चोरी उसके शव को समुद्र में फैंक दिया।

कासगंज (एटा=उत्तर प्रदेश) में बैठे पिता का आशीर्वाद अण्डमान भी पहुँच रहा था। बलिदानी पिता ने पुत्र को लिखा था- 'इस टापू पर सरकार ने देशभर के जगमगाते हीरे चुन-चुन कर जमा किये हैं। मुझे खुशी है कि तुम्हें उन हीरों के बीच रहने का मौका मिल रहा है। उनके बीच रह कर तुम और चमको, मेरा तथा देश का नाम और अधिक रोशन करो , यही मेरा आशीर्वाद है।'

जिस आजादी के लिए शहीदों ने जेल की यातनाओं को फूलों की वर्षा व फाँसी को वरमाला समझ कर सहर्ष स्वीकार किया, फिर उस आजादी के आने पर जीवित शहीदों की आँखों ने अपने रंगीन सपनों को उजड़ते देखा, तो उनका कलेजा फट गया होगा। सन् १९६७ ई० में क्रांतिवीर शिववर्मा ने लिखा-

'आज जिस आजादी का उपभोग हम कर रहे हैं, उसकी बुनियाद डालने में महावीर सिंह और उन जैसे कितने ही ज्ञात तथा अज्ञात क्रांतिकारियों ने अपना रक्त और मांस गला दिया था। किसी देश में महावीर सिंह जैसे बहादुर देशभक्त और उनके पिता जैसी महान आत्मायें रोज-रोज जन्म नहीं लेती। उनकी यादगार हमारे गौरवपूर्ण इतिहास की पवित्र धरोहर है। क्या हम उसका उचित सम्मान कर रहे हैं?'

जयदेव कपूर-

वीर भगतसिंह ने अपनी जेल डायरी में स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज के योगदान के विषय में लिखा है-'१९०७ से लेकर आज (१९३१ ई०) तक हिन्दुओं की एक बड़ी आबादी (पंजाब में) राजद्रोह और दूसरे राजनीतिक अभियोगों के तहत

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

आज समय ने हमें सोचने को फिर से मजबूर कर दिया।
आजादी ने हमें हमारी धरती से क्यों दूर कर दिया?
तन को मुक्ति मिली तो, लेकिन बुद्धि और मन दास हो गए,
नैतिक जीवन-मूल्य आज, क्यों बीता इतिहास हो गए?
क्यों अपनों से घृणा और क्यों गैर हमें अपने लगते,
गौरवमय बलिदान हमें क्यों अब बीते सपने लगते?
सिंहासन का मोह हमारी आँखें बन्द किये बैठा है,
झूठ, फरेब, दम्भ का दानव, अपनी नस-नस में पैठा है।
हमें बदलना होगा तब ही, खोई मंजिल मिल पाएगी,
राष्ट्र पुरुष के चरण-तलों में, दुनिया खुद ही झुक जाएगी।
तभी शहीदों के सपनों को मूर्तरूप हम दे पाएँगे।
औरों के हित जीकर वैभव के शिखरों पर चढ़ पाएँगे।

घर को स्वर्ग बनाएँ

❒सहदेव समर्पित

घर-बार, रिश्ते-नातों का झूठे बताने वाले गुरुओं की बाढ़ आई हुई है, जो वैराग्य का उपदेश देते हैं। पर इस घर में भी स्वर्ग है, वास्तव में यह घर ही स्वर्ग है- इस वैदिक शिक्षा को हम भूल गए हैं।

मानव धर्म या वैदिक धर्म को वर्णाश्रम धर्म के नाम से भी जाना जाता है। जब से हमारे देश में वर्ण और आश्रम की मर्यादाएँ टूट गई, तभी से जीवन दु:खों का घर बन गया है। चारों वर्णों में केवल एक वर्ण रह गया है- वैश्य। ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र के कर्म और कर्त्तव्य छोड़कर केवल धन कमाना ही सभी का उद्देश्य बन गया है। सारी व्यवस्था धन केन्द्रित हो जाने पर भी सबके पास धन का अभाव ही है। चारों आश्रमों में से केवल एक आश्रम रह गया है- गृहस्थ। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास तो जैसे लुप्त ही हो गए हैं। और यह एक आश्रम भी दु:खों का घर बन गया है। गृहस्थ की व्यवस्था और मर्यादाएँ छिन्न-भिन्न हो गई हैं। विवाह में लाखों रुपये खर्च कर दिए जाते हैं पर यह किसी को पता ही नहीं कि विवाह क्यों किया जाता है। बच्चे माता-पिता से दु:खी हैं और माता पिता बच्चों से। घर-बार, रिश्ते-नातों का झूठे बताने वाले गुरुओं की बाढ़ आई हुई है, जो वैराग्य का उपदेश देते हैं। पर इस घर में भी स्वर्ग है, वास्तव में यह घर ही स्वर्ग है- इस वैदिक शिक्षा को हम भूल गए हैं।

गृहस्थ किसलिए?

ऋषि दयानन्द कहते हैं कि उत्तम संतान की उत्पत्ति और वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए विवाह किया जाता है। गृहस्थाश्रम को महर्षि ऐहिक और पारलौकिक सुखों की प्राप्ति का साधन बताते हैं। हमारा गृहस्थ सब प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न हों, और हमारा परलोक भी सफल हो; इसके उपाय भी गृहाश्रम प्रकरण में बताए हैं-

१-अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना

२-नियतकाल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना।

३-सत्य धर्म में ही अपना तन, मन, धन लगाना। और

४-धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करनी।

इस प्रकार गृहस्थ के माध्यम से इस लोक के और परलोक के सब सुखों की प्राप्ति की जा सकती है।

परोपकार :

गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम इसीलिए माना जाता है क्योंकि इसमें रहकर हमें परोपकार के सर्वाधिक अवसर प्राप्त होते हैं। मनु के अनुसार जैसे सभी नद और नाले समुद्र को प्राप्त करके ही स्थिरता को प्राप्त करते हैं, अन्यथा भटकते ही रहते हैं उसी प्रकार अन्य तीनों आश्रमों का आश्रय भी गृहस्थ आश्रम ही है। यदि गृहस्थ होकर परोपकार नहीं किया जाए तो सभी प्रकार की वर्णाश्रम व्यवस्था खण्डित हो जाती है।

परोपकार की भावना : यज्ञ की भावना :-

परोपकार की भावना को दृढ़ करने के लिए ही गृहस्थ के लिए पंच-महायज्ञ का विधान किया गया है। परोपकार की भावना यज्ञ की भावना है, जिसमें देवपूजा संगतिकरण और दान होता है। यज्ञ को आत्मसात् करने का अर्थ है **'देने'** का भाव रखना। यह यज्ञ की प्रकृति है कि हम **'देते'** हैं तो **'लेते'** हैं। यह इस सृष्टि का स्वभाव है कि यहाँ बिना दिए कुछ लिया नहीं जा सकता। हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमने दूसरों के सहयोग के बिना प्राप्त किया हो। तो यह हमारा सामाजिक दायित्त्व है कि अपने प्राप्त किए हुए पदार्थों का दूसरों की भलाई के लिए सदुपयोग करें। परोपकार तथा दान वैदिक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। वेद में अकेला खाने वाले को पापी कहा गया है।

मैं एक गाँव में दान के विषय में बोल रहा था। मेरे बाद एक साधु बोले- ये तो बेचारे किसान हैं। इनके पास दान देने के लिए कहाँ है! मैंने उस समय उनसे बहस करना उचित नहीं समझा। वास्तव में ऐसी बात नहीं है। किसान तो जितना उपकार करता है उतना संभवत: कोई और करता भी नहीं होगा। उसके घर में अनाज आने से पहले लाखों प्राणी उस अन्न से अपना पेट भरते हैं। आपके पास कितना है- यह प्रश्न नहीं है। प्रश्न यह है कि आप की नीयत कैसी है। और फिर दान धन का ही नहीं होता। आप ब्राह्मण हैं तो आप विद्या का दान कीजिये। आप क्षत्रिय हैं, शक्तिशाली हैं तो अभयदान कीजिये। आप वैश्य हैं तो धन

का दान कीजिये। आप के पास कुछ भी नहीं है तो श्रम का, सेवा का दान कीजिये- शुभ कामनाओं का दान कीजिये। वेद में कहा है कि जो आपदग्रस्त की अन्न धन आदि से सहायता नहीं करता और स्वयं ही भोग करने में संलग्न रहता है वह कभी सुखी नहीं हो सकता। इस जीवन में कुछ लेना है तो देना सीखना होगा। आप देना सीखेंगे तो आप के पास कोई कमी नहीं रहेगी।

परोपकार की भावना से ही घर चलता है। घर के सभी सदस्य एक दूसरे के लिए त्याग करते हैं। यदि यह भावना समाप्त हो जाए तो एक क्षण के लिए भी परिवार नहीं चल सकता। घर में जो सदस्य धन कमाता है वह केवल खुद के लिए ही कमाने लगे-- घर में जो माता बहन खाना बनाती है वह खुद के लिए ही बनाने लगे तो वह घर, घर रह ही नहीं सकता। त्याग का पाठ हम अपने परिवार से ही सीखते हैं। पिता स्वयं अभावों में रहते हुए भी संतान के लिए उत्तम व्यवस्था करता है। गृहिणी स्वयं भूखी रहते हुए भी पहले अपने परिवार को खिलाती है। हम दूसरों की सहायता करके अपने परिवार को ही मजबूत बनाते हैं।

समय नियोजन :

आजीविका के कार्य तो करने हैं। गृहस्थ को सफल और उत्तम बनाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए? क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं चाहिए? तो शारीरिक व्यायाम और भ्रमण आदि नहीं करना? आत्मिक उन्नति भी करनी है- तो ईश्वर की उपासना भी करना। व्यायाम न करने से शरीर रोगों के घर बन रहे हैं। फिर यह पवित्र देवालय हमारा शरीर-- दवाईयों का गुलाम बन गया है। ईश्वर उपासना न करने से मनों में कुण्ठाएँ, तनाव, अवसाद, ईर्ष्या, द्वेष निराशा आदि बढ़ रहे हैं। जो ईश्वर सदा सर्वदा हमारे पास है और जो हर प्रकार की कृपा की वर्षा करता है। उसकी कृपा से वंचित रहकर हम समोसे, चाट-पकौड़े खाकर और 'नामदान' लेकर कृपा प्राप्त करना चाहते हैं। संध्या करते हो? समय नहीं मिलता। आपके नगर में बहुत बड़े विद्वान् महात्मा उपदेश करने आए हैं। उनका प्रवचन प्रतिदिन होता है। आप वहाँ परिवार सहित आईये। समय नहीं मिलता! ताश खेलने के लिए समय मिलता है, टी वी से चिपके रहने के लिए समय मिलता है। आत्मिक और शारीरिक उन्नति के लिए समय नहीं मिलता तो यह आपकी अपनी हानि है किसी और की नहीं। पहले तो आपका ये संकल्प हो कि हमें अपने घर को स्वर्ग बनाना है और अपने जीवन को आनन्दपूर्वक व्यतीत करना है। उसके पश्चात् आप घर में करने योग्य कार्यों के लिए टाईम मैनेजमैंट कीजिये। एक निश्चित दिनचर्या बनाईये, जिसमें परिवार के सभी सदस्य सम्मिलित हों। एक गृहस्थ की दिनचर्या प्रातः ब्रह्ममुहूर्त्त से लेकर रात्रि दस बजे तक व्यस्ततम दिनचर्या होती है। प्रातः ईश्वर का चिन्तन तथा धर्म और अर्थ का विचार किया करें। संन्ध्या, स्वाध्याय और अग्निहोत्र सामूहिक हों तो अच्छा। सीरियल छोड़कर स्वाध्याय की परम्परा को पुनः जाग्रत कीजिये। संध्या और स्वाध्याय करने से बच्चे नास्तिक या अंधविश्वासी नहीं बनेंगे। जब हमारे घरों में स्वाध्याय के रूप में ऋषियों को स्थान मिलेगा तो हमारे घरों में पाखण्डी नहीं आएँगे। जो व्यक्ति संध्या-स्वाध्याय के लिए समय नहीं निकालता, उसे पारस्परिक झगड़ों के लिए समय निकालना पड़ेगा। जो व्यक्ति व्यायाम नहीं करता उसे डॉक्टरों के लिए और बीमार होकर पड़े रहने के लिए समय निकालना पड़ेगा। एक निश्चित समय पर उपासना, एक निश्चित समय पर भोजन, विश्राम करने का नियम बन जाएगा तो समय की कोई समस्या नहीं रहेगी और ना ही कोई कार्य अधूरा पड़ा रहेगा। आजकल बच्चों पर पढ़ाई का बड़ा बोझ है। यदि वे नियम से संध्या और व्यायाम करेंगे तो उनका शरीर और मन शुद्ध, सात्त्विक होगा। उनकी ग्रहण शक्ति, धारण शक्ति, स्मरण शक्ति, एकाग्रता बढ़ेगी। समय को सही कार्यों में नहीं लगाया जाएगा तो वह उलटे कामों में लगेगा। उससे हमारे संस्कारों की सम्पत्ति बरबाद हो जाएगी। इसलिए ऋषि कहते हैं कि नियतकाल में ईश्वर उपासना और गृहकृत्य करना।

सत्य धर्म में ही अपना तन, मन, धन लगाना :

गृहस्थ की सारी सामर्थ्य सत्य और धर्म की उन्नति में ही लगनी चाहिए। सेवा करो तो विद्वान् महात्माओं की, धूर्त्त पाखण्डियों की नहीं। दान दो तो परोपकार के कार्यों में, सत्य विद्या की उन्नति के लिए, दिखावे के लिए नहीं। और अपने गृहस्थ धर्म का पालन पूर्ण पुरुषार्थ से करें चाहे उसमें कितने ही कष्ट आएँ।

धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करनी।

संतान तो पशुपक्षी भी उत्पन्न करते हैं, मनुष्य के लिए यह विशेष है कि वह धर्मानुसार सन्तान उत्पन्न करे। सन्तान प्राप्त करने का विचार आने से पहले ही उसके निर्माण की योजना बना लेनी चाहिए। गर्भाधान संस्कार के पहले से लेकर उसके जन्म तक माता को अपनी सन्तान के उत्तम संस्कारों और उत्तम स्वास्थ्य के लिए विशेष प्रयत्न करने होते हैं, जो सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि में लिखे हैं। बालक का पहला गुरु माता ही उसका निर्माण करने वाली होती है। सफल गृहस्थ के लिए माता पिता दोनों को ही सन्तान निर्माण के विज्ञान का विशेष अध्ययन करके विशेष चिन्तन करना चाहिए। उत्तम सन्तान का निर्माण करना गृहस्थ का प्रथम उद्देश्य है।

इस प्रकार गृहस्थ ऐहलौकिक और पारलौकिक सुखों की प्राप्ति का साधन बन सकता है।

प्रशंसा और प्रोत्साहन से

असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है!

❑**डॉ० जगदीश गांधी,** शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

प्रशंसा और प्रोत्साहन का हमारे जीवन में चुम्बकीय प्रभाव होता है। असम्भव कार्य सम्भव में बदलने लगते हैं। मानवीय पोषण के कई अन्य तत्व भी हैं जो हमारे जीवन में काया पलट कर देते हैं। मानव जाति का सर्वश्रेष्ठ पोषण है प्रेमभाव। यानि कि प्यार देना, लोगों को दिल से पसन्द करना, सफलता की सर्वश्रेष्ठ आदत है।

लोगों के जीवन पर हम तभी प्रभाव डाल सकते हैं जब हम उनसे प्रेम करते हैं। मानवीय सम्बधों के मर्मज्ञ **जिम डार्नन** कहते हैं कि 'प्रेम के बिना कोई संबंध, कोई भविष्य और कोई सफलता आकार नहीं लेती।' जब कोई हममें आस्था और विश्वास व्यक्त करता है तो हम अपने में और अधिक आस्था और विश्वास महसूस करते हैं जिससे हमारी कार्यक्षमता १० से ५० गुना बढ़ जाती है।

❖प्रेम देना- सफलता की सर्वश्रेष्ठ आदत है।

❖नफरत या द्वेष करने से हमारी समस्त आन्तरिक सोच और भावनायें नकारात्मक और दोषपूर्ण हो जाती हैं।

❖अच्छे नेतृत्व और सफलता के लिए अच्छे विचार, सही निर्णय तथा सुनिश्चित उद्देश्य का होना आवश्यक तत्व है।

प्रेम मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति की बाह्य अभिव्यक्ति है और मानवीय गुणों में सर्वश्रेष्ठ गुण है। इस सृष्टि में प्रेम से बड़ी कोई मानवीय शक्ति नहीं है।

महान चिंतक **चार्लर हुवेल** ने ठीक ही कहा है कि जब हम अपनी सोच में प्यार शब्द को आत्मसात कर लेते हैं, तो हमारे अन्दर असीम ऊर्जा और तीव्रता का प्रवाह होने लगता है। हम इस संसार की हर वस्तु तथा हर इंसान से प्यार करने लगते हैं और हमारा जीवन पूर्णता में बदल जाता है। प्रेम जीवन का सार है, इंसान को इंसान से तथा अधिकारी को कर्मचारी से जोड़ने का एकमात्र साधन है।

विश्व विख्यात पुस्तक **'थिंक एण्ड ग्रो रिच'** के लेखक **नेपोलियन हिल** का मानना है कि जो लोग विनम्रता, न्याय, प्रेम और आस्था के गुणों से सम्पन्न होते हैं, वे अपने सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों का हृदय जीत लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सभी आदर और सम्मान करते हैं तथा उनकी आज्ञाओं का सहर्ष पालन करते हैं।

मनोवैज्ञानिक तथ्य हमें स्पष्ट करते हैं कि जब हम किसी से नफरत या द्वेष करते हैं तो उस समय हमारी समस्त आन्तरिक सोच और भावनायें नकारात्मक और दोषपूर्ण हो जाती हैं। प्रेम जिंदगी के काले बादलों के बीच में इन्द्रधनुष के समान है। यह सुबह और शाम का सितारा है। यह हृदय नामक अद्भुत फूल की सुगंध है। इसके पवित्र भाव और दैवीय आवेग के बिना हम पशु से भी निम्न स्तर पर पहुँच जाते हैं। लेकिन इसके होने पर धरती स्वर्ग बन जाती है और हम दैवीय स्तर पर पहुँच जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

कलमकार हूँ मैं

❑**डॉ० कैलाश निगम**

मैं सच हूँ जहाँ में खतावार हूँ मैं।
मगर अब भी लोगों को दरकार हूँ मैं।।

खुदा पर फिदा है जो अपनी अदा से
उसी इक अदा का तलबगार हूँ मैं।

बस उसके इशारे पे सब हो रहा है
कभी यह न कहना, मददगार हूँ मैं।

मैं सच्चाई की राह दिखला रहा था
सभी ने ये समझा कि दीवार हूँ मैं।

भरोसा रखो, तुम दुआएँ तो माँगो
किसी भी दवा से असरदार हूँ मैं।

न जादू, न बाजी, न कोई करिश्मा
कलमकार था और कलमकार हूँ मैं।

मैं 'कैलाश' हूँ मुझपे साया है माँ का
सभी साजिशों से खबरदार हूँ मैं।

४/५२२, विवेक खण्ड-४ गोमतीनगर, लखनऊ

कहानी

सौन्दर्य की परख

❑**मदन मोहन वर्मा,** एस० बी० ९७, शास्त्री नगर, गाजियाबाद-२०१००२

यह वह युवती है जिसे सबने तिरस्कृत किया केवल इसलिए कि वह काजली-चमड़ी की स्वामिनी थी, बिना यह विश्लेषित किये हुए कि उसके कमनीय देह में एक दिल भी है जो धड़कता भी है, महसूस भी करता है, जो उजला है। जो बिना किसी लाग लपेट के जीवन को जीने हेतु लालायित है और अपनी उपयोगिता को अपने सांसारिक योगदान के माध्यम से साबित करने के लिए आतुर भी है।

'अंकल!'

'सुन्दर को सभी आँखें देखती हैं बिटिया।'

सिकरौल से ट्रेन रामबाग, प्रयाग के लिए प्लेटफार्म छोड़ चुकी थी। वह सामने वाली बर्थ पर खिड़की के सहारे बैठी हुई थी। वह डिब्बे में पहले से बैठी हुई थी और मैं अपनी बर्थ पर अभी कोई बीस मिनट पहले ही आकर बैठा था। एक ब्रीफकेस था जो मैं खिड़की के सहारे टिका कर हाथ टेकने की सुविधा का ध्यान रखते हुए बैठ गया और एकटक उस सुन्दरी को लगभग घूरने ही लगा और संभवतः इन घूरती नजरों के प्रति वह थोड़ी असहज महसूस करने लगी होगी। तभी उसने मुझे सम्बोधित किया होगा। मैंने उसका उत्तर भी शालीनता से दिया परन्तु नजरें उसके चेहरे पर ही टिकी रहीं।

'अंकल, मेरे चेहरे में ऐसी क्या खास बात है जो आप जब से बैठे हैं, घूरे जा रहे हैं और बिटिया का भी सम्बोधन कर रहे हैं?'

'क्या?'

मेरी बारी थी, अब असहज होने की, किन्तु उसी असहजता की चादर ओढे हुए प्रकटतः कहा- 'बिटिया को क्या 'अंकल' घूर नहीं सकता, वह भी तब जब वह वास्तव में सुन्दरतम हो, विशेषतः इस अधेड़ होते हुए अंकल की नजरों में।'

'मैं और सुन्दरतम! यह कहाँ का मजाक, या तिरस्कार है अंकल? मेरी माँ से लेकर सभी ने इन दो दशकों में मुझे कुलच्छिनी, बदसूरत, बददिमाग, काली-कलूटी और चुडैल आदि नामों से ही पुकारा है। आप पहले ऐसे व्यक्ति हैं जो मुझे सुन्दर तो छोड़िये 'सुन्दरतम' कह रहे हैं।'

'यह तो नजरों का दोष है। छवि का आकलन है और देह के भीतर जो दिल है, उसकी आवाज है। फिर चेहरा यदि नैसर्गिक हो, उस पर परत-दर-परत कुछ भी थोंपा न गया हो तो वह सृष्टि की एक रचना की अनुभूति कराता है और यही कारण है कि मेरी दृष्टि में तुम अद्भुत सुन्दरी हो, आसमान से उतरी हुई वह परी जिसे अपने प्रकोष्ठ में रखने के लिए स्वयं देवराज भी आकुल दिखें।'

'नहीं अंकल। आप, हॉ आप अतिशयोक्ति कर रहे हैं।' वह थोड़ा संकोचमय मुस्कान बिखेरने का विकल्प ढूंढती दीख पड़ी।

'हाँ, तुम इसे अतिशयोक्ति की परिभाषा दे सकती हो। हमें कोई ऐतराज नहीं। पर इसे भी नहीं झुठलाया जा सकता कि तुम सौन्दर्य की एक प्रतिमा हो।'

मौन! मौन पसर गया। इस बीच ट्रेन माधोसिंह स्टेशन पर पहुँच गई थी। चाय-पकौड़ी वाला चिल्ला-चिल्ला कर कान के परदे फाड़ने का प्रयास कर रहा था। मैंने उससे दो चाय ली और एक सामने बैठी हुई बच्ची को पकड़ाते हुए केवल इतना ही बोल पाया, 'लो चाय पीओ।'

उसने बिना किसी प्रयास के चाय खिड़की के बाहर उड़ेल दी।

'मैं चाय नहीं पीती।'

कुछ अजीब सा जरूर लगा परन्तु मैंने इसे जीवन के एक रस की भाँति लिया और चुप ही रहा लगभग आधा घण्टा। हाँ, यह अवश्य सोचता रहा कि आखिर यह लड़की क्यों सुन्दर लग रही है जबकि हम पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग चमड़ी को ही अत्यधिक महत्व देते हैं और यह तो आबनूसी रंग की रमणी है जिसकी ओर वास्तव में कोई पुरुष क्या नारी भी आंखें उठाकर देखना नहीं चाहेगी। परन्तु मैं तो उसके रूप का कायल हो गया हूँ। मेरे लिए तो वह अप्सरा है।

'बेटी'

'जी अंकल'

'तुम्हारा नाम?'

'सांवली'

'कहाँ जा रही हो?'

'इलाहाबाद'

'वहाँ से?'

'मुट्ठीगंज।'

'क्यों?'

'शिक्षिका हूँ मैं, कन्या वैदिक में।'

'कहाँ से आ रही हो?'

'कबीर चौरा बनारस से।'

'घर में--?'

'माँ-बाप, एक बहन, एक भाई सभी हैं। मैं बड़ी हूँ।'

'तुम्हारा विवाह?'

मुस्करायी वह। माथे पर स्पष्ट सिलवट दिखाई पड़ी उसके। सकुचायी सी लग रही थी वह। थोडी देर मौन रही वह, फिर-

'परित्यक्ता हूँ मैं।'

'विधिवत्?'

'नहीं, तलाक नहीं लेना है मुझे। वह गोरी-चिट्टी, चिड़चिड़ी, कटुतापूर्ण, स्वार्थी, लोभी एवं चालाक उन्नीस वर्षीया अपने मित्र की सहोदरा के आगोश में रहने में अपने को धन्य समझते हैं। मैं तो तिरस्कृत उनके योग्य हूँ ही नहीं।'

'ऐसा वह कहते हैं या--?'

'वह कहते ही नहीं, लिख कर दे भी चुके हैं मेरे माँ-बाप को।'

'फिर विवाह क्यों रचाया?'

'कार, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद में साढ़े चार सौ मीटर में स्थित बंगला और दस लाख के सावधि जमा के बदले सात फेरे लिये थे, सात दिनों के लिए। सात जन्मों की कसमें तो सपने में लीं थीं उन्होंने।'

'तलाक ले लो।'

'क्यों अंकल?'

'फिर विवाह कर लो।'

ठठा के हँसी वह इतनी जोर से कि सारा डिब्बा उसकी हँसी को पचा नहीं सका। लगभग आधा डिब्बा मेरे केबिन में झांक गया।

'क्यों हंस रही हो, बेटा?'

'अंकल, एक तिरस्कृत, परित्यक्ता, विवाहित, तलाक रहित, बदसूरत, तवे के रंग को भी नकारती हुई मेरी काजली चमड़ी को आप क्यों चिढ़ा रहे हैं? देवाधिपति ने मेरी हस्तरेखाओं में पति की रेखा बनायी ही नहीं है, देखिये, गौर से देखिये, कहीं है वह लकीर?' कह कर दोनों हाथ मेरे सामने पसार दिये उसने।

हस्तरेखा विशेषज्ञ तो नहीं था मैं, परन्तु दोनों हाथों में तीन-तीन रेखाओं के अतिरिक्त कोई अन्य रेखा दिखाई ही नहीं पड़ रही थी और वह भी तीनों की तीनों पूर्णतः स्पष्ट, बिना कटी-मुड़ी केवल पेन्सिल-सरीखी खिंची यह दोनों हाथों की रेखाएं इतना तो स्पष्ट कर रहीं थीं कि वह निश्छल थी, निष्कपट थी और थी अनभिज्ञ उन दैविक बातों से जिन्हें हम 'भाग्य' के नाम से पुकारने की धृष्टता करते है। यह भूल कर कि 'भाग्य' गौण है और 'कर्म' प्रधान, जो भाग्य को अपने अधीन करने की पूरी क्षमता रखता है। बात केवल कोशिशों की है और तदनुसार अग्रसर होने की दृढ़-इच्छा की है। परिस्थितियों और सांसारिक वर्जनाओं एवं वर्चनाओं के मध्य झूलती हुई यह वह युवती है जिसे सबने तिरस्कृत किया केवल इसलिए कि वह काजली-चमड़ी की स्वामिनी थी, बिना यह विश्लेषित किये हुए कि उसके कमनीय देह में एक दिल भी है जो धड़कता भी है, महसूस भी करता है, जो उजला है। जो बिना किसी लाग लपेट के जीवन को जीने हेतु लालायित है और अपनी उपयोगिता को अपने सांसारिक योगदान के माध्यम से साबित करने के लिए आतुर भी है। परन्तु सूर्यास्त पश्चात् अमावस्या में जो अंधेरा उसके जीवन में छाया हुआ है, वह उसे सांसारिक मोह से दूर ले जाने की चेष्टा में लगा हुआ है। वह सांस तो ले रही है, हँस भी रही है, मंद-मंद मुस्काने में भी माहिर है वह, गम को अपनी धीर-गंभीर मुस्कान के पीछे छिपाने की कला में भी पारंगत हो चुकी है वह; परन्तु मेरे अधेड़ावस्था के जीवनानुभव को थोड़ा भी समझने की चेष्टा करती वह तो वह विद्रूप हंसी न हंसती और न वह अपना हाथ ही पसारती मेरे समक्ष उसे पढ़ने के लिये। यह वह गुण है उसका जिस पर रीझ जाना मेरी नियति थी और जिसे मैं निःसन्देह स्वाभाविक समझता हूँ।

'तुम्हारे हाथ की रेखाएं भी अद्भुत हैं और मेरे अनुसार वे तर्कसंगत तो हैं ही साथ ही तुम्हारे भावी जीवन की ओर इंगित भी करती हैं।'

'मैं नहीं मानती अंकल। मेरा छोटा, परन्तु संसार की विषमताओं भरी कार्यशैली का द्योतक अनुभव आपकी किसी भी बात को झूठा साबित करने के लिए पर्याप्त है।'

'नहीं बेटी, यह तुम्हारा अनुभव नहीं, तुम्हारे अन्दर की कटुता का द्योतक है।'

'चलिये मान लेती हूँ, मेरी कटुता उजागर हो रही है, परन्तु गलत कहाँ हूँ मैं।'

'गलत हो तुम। प्रथमतः तुम स्वयं को असुन्दर, असफल एवं अयोग्य समझना छोड़ दो और मेरी बात की ओर ध्यान दो।'

'क्या?'

'यही कि तुम अपने पति से तलाक ले लो और जब इस सम्बन्ध से विधिवत् तुम्हारा विच्छेद हो जाय तो (अपना कार्ड थमाते हुए) मेरे पास आना। मेरा एडवोकेट चौबीस वर्षीय भांजा तुम्हारी प्रतीक्षा में रहेगा। तुम्हें अंगीकार करने के लिए, संवारने के लिए और जीने का अर्थ समझाने के लिए।'

'अंकल!'

'हाँ, सुन्दर को सभी आँखें घूरती हैं। मेरा भांजा भी असुन्दर-सुन्दर मे भेद करना जानता है और सुन्दर को स्वीकृति प्रदान करने में उसे जरा भी हिचक नहीं होगी।'

'अंकल?'

'रामबाग आ गया बेटी, अब चन्द समयान्तर पश्चात् एकाकार होने की प्रतीक्षा करनी होगी-हम दोनों को। स्मरण रहे सौन्दर्य की परख है मुझमें और मेरे भांजे में भी।'

वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है

❑स्व0 डॉ0 सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है। इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का अदिति शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्‌भुत शब्द है। 'अदिति' के लिए ऋग्वेद में (1.89.10) मंत्र है-

अदितिः द्यौः अदितिः अन्तरिक्षं अदितिः माता सः पिता सः पुत्रः।विश्वेदेवाः अदितिः जनाः अदितिः जात अदितिः अदितिः जनित्वम्।।

इस मंत्र का अर्थ है कि संसार में जो कुछ है वह 'अदिति' है। 'अदिति' शब्द 'दिति' से बना है। जो 'दिति' न हो वह 'अदिति' होगा। 'दिति' शब्द 'दोः अवखंडने' धातु से बना है। 'दिति' का अर्थ है-खंडित 'अदिति' का अर्थ हुआ- 'अखंडित'। खंडित का अर्थ है- एक से दो, दो से तीन, तीन से चार- इस प्रकार बंटते जाना। अखंडित का अर्थ है- सदा-सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बंटना।

जितना भौतिक-ज्ञान है, जिसे हम विज्ञान कहते हैं, वह सब 'दिति' के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी सत्य माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते असत्य हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। अगर सब कुछ 'अदिति' है जो जात या जनित्व है, वह सब 'अदिति' है तो वेद भी 'अदिति' है, सत्य भी 'अदिति' है, वेद-ज्ञान भी 'अदिति' है। वेद-ज्ञान को 'अदिति' कहने का अर्थ हुआ 'अखंडित ज्ञान', ऐसा ज्ञान जो सदा-सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं-सदा सत्य, सनातन। इसी 'अदिति' शब्द के लिये ऋग्वेद (८.१८.६) में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनसे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है-

अदितिर्नो दिवा पशुमदितिर्नक्तमद्वया।
अदितिः पात्वंहसः सदावृधा।।

इस मंत्र में अदिति के लिए 'अद्वय' तथा 'सदावृध' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'अद्वय' का अर्थ है-जो दो न हो, 'सदावृध' को पदच्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं- 'सदावृध'- अर्थात् जो सदा बढ़ता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे, बंटता रहे। इसका दूसरा अर्थ है- सद् अवृध, जो सदा एक रहे, एक से दो, दो से तीन न हो, नित्य-सनातन, एक रूप में बना रहे। इस प्रकार वेद ने ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है- 'अदिति', 'सदावृध' तथा 'सदा-अवृध'। 'अदिति' वह ज्ञान है जो सदा एक रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते। 'सदावृध' वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है। आज यह और कल वह। बढ़ेगा तो बदल कर ही तो बढ़ेगा। यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा में 'विज्ञान' कहते हैं। सदा अवृध वह ज्ञान है जिसे हम पहले 'अदिति' कह आये हैं- सत्य ज्ञान, अखंडित ज्ञान, एक ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं। भौतिक ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, 'सदावृध' रहता है, बदलता रहता है, यह भौतिक विज्ञान है। इसका गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, 'अदिति' या 'अद्वय' है, सदा सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है।

संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह सत्य है, सत्य ज्ञान है। 'सत्य' सदा एक रहता है, अखंडित रहता है। वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा 'अद्वय' है, 'अदिति' है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि वह भी ठीक है और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा 'अद्वय' होता है।

उदाहरणार्थ- हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी, पारसी हो सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि सत्य भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं। सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिए, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो, द्वेष भी करो। सब कहेंगे कि परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर-अपकार भी करो तथा इस प्रकार के अनेक ऐसे आधार भूत तत्व हैं, जो 'अद्वय' हैं अर्थात् उनमें दो पक्ष नहीं हो सकते।

अगर 'अदिति' का अभिप्राय 'अद्वय' है तो वेद ने इस शब्द को उक्त मंत्र में सदावृध-शब्द के साथ (जिसका अर्थ है- सदा वर्धमान, सदा बदलने वाला) क्यों रखा? वर्धमान तो वह तत्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा, बड़े से बहुत-बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है कल वैसा नहीं है अर्थात् पहले जैसा नहीं है। जो चीज या जो विचार बदलता रहेगा, वही तो बढ़ेगा। वेद में एक-साथ 'अद्वय' तथा 'वर्धमान' को जोड़ देना एक रहस्य की बात है। यजुर्वेद के 40 वें अध्याय (मंत्र 13,14) में 'विद्या' तथा 'अविद्या' इन दो शब्दों का उल्लेख करते हुए लिखा है:-

अन्यदाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्याया।
इति शुश्रुम धीराणां येनस्तद्विचचक्षिरे।।
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोऽभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

वेद के ये दोनों मंत्र विलक्षण हैं। इनमें से पहले का अर्थ तो स्पष्ट है। प्राय: अक्षर-ज्ञान तथा पढ़ने-लिखने को हम 'विद्या' कहते हैं। वेद का कहना है कि 'विद्या' तथा 'अविद्या' के ये अर्थ नहीं हैं। इतना ही नहीं, इन शब्दों के यथार्थ-अर्थ बतलाते हुए वेद का कहना है कि 'अविद्या' रूपी विद्या से मनुष्य मृत्युंजय बन जाता है, मृत्यु को जीत लेता है, परन्तु 'विद्या' रूपी विद्या से तो वह अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। वेद की यह विलक्षण घोषणा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक तथा लौकिक शब्दावली में जमीन-आसमान का अन्तर है। उक्त घोषणा से स्पष्ट है कि वेद यहाँ भौतिकवाद तथा भौतिक-विज्ञान को 'अविद्या' कह रहा है क्योंकि औषधि आदि तथा उसी प्रकार के भौतिक साधनों से जीवन को दीर्घ किया जा सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है, मृत्यु-समुद्र को तरा जा सकता है। किन्तु अमरत्व तो सिर्फ अध्यात्मवाद तथा अध्यात्मविज्ञान से ही प्राप्त होता या हो सकता है। तभी कहा- 'अविद्यया' मृत्युं तीर्त्वा, और आगे कहा- 'विद्यया अमृतमश्नुते' यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है, जब वह 'वर्धमान' हो आगे-आगे बढ़े। आज का वैज्ञानिक-जगत् इसीलिए श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल वही परीक्षण तथा खोज करते-करते गलत मानकर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान रुक जाय, किसी जगह आकर खड़ा हो जाय, तो वह फैंक देने लायक होगा। परन्तु हमारी यह बात सिर्फ भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। आध्यात्मिक तत्व सदा 'अद्वय', 'वर्धमान' होता हुआ भी 'अवर्धमान' होता है। 'हिंसा' से शुरू कर मनुष्य 'अहिंसा' पर जाकर रुक जाता है, असत्य से शुरू कर 'सत्य' की खोज में भटकता है, चोरी-डाके- 'स्तेय' से चलता-चलता शांति-सन्तोष 'अस्तेय' को जीवन का लक्ष्य बनाता है, पर-दारा-गमन या अब्रह्मचर्य और दुराचार में भटकता-भटकता 'ब्रह्मचर्य' तथा 'सदाचार' को परम ध्येय समझने लगता है। भौतिक-तत्व जब तक 'वर्धमान' तक सीमित रहते हैं तब तक जीवन अपने ध्येय को नहीं पकड़ता। जब जीवन के 'वर्धमान' तत्व 'अवर्धमान' हो जाते हैं, जब वे हिंसा से अहिंसा, असत्य से सत्य, स्तेय से अस्तेय, अब्रह्मचर्य से ब्रह्मचर्य, परिग्रह से अपरिग्रह तक पहुंच जाते हैं, तब मनुष्य 'अद्वय', 'अदिति', 'अवर्धमान', एक-नित्य-सनातन को पा लेता है। उसी 'अद्वय', 'अदिति', 'अखंडित' सत्य का वर्णन वेद में है। हमारे कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि वेद में सिर्फ अध्यात्मवाद का वर्णन है, भौतिकवाद या विज्ञान का नहीं है। भौतिक ज्ञान जब बढ़ेगा, तो बढ़ते-बढ़ते उसकी सीमा भी कभी-न-कभी आयेगी। वृक्ष ऊंचा जाता है, परन्तु कहीं तो बढ़ना रुक जाता है। 'वर्धमान' जब 'अवर्धमान' हो जाता है, तब वही 'अद्वय' हो जाता है, 'अदिति' हो जाता है। भौतिकवाद जब रुक जाता है और जहाँ रुक जाता है, तब और वहाँ अध्यात्मवाद शुरू हो जाता है। इसी को ऋग्वेद में 'अद्वय' 'अदिति', या 'सदावृध' से सदा-अवृध कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं, ज्ञान या तो 'वर्धमान' होगा या 'अवर्धमान' होगा। 'वर्धमान' ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बना रहता है, बढ़ता रहता है। 'अवर्धमान' ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन है, एक है, अद्वय है, अदिति है, बदलता नहीं।

क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं, ईश्वरीय देन है। इसलिए वेद ने उसे 'अद्वय' तथा 'अदिति' कहा है, परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा परमेश्वर दोनों हैं-इसलिए ज्ञान को वेद में 'सदावृध' कहा है। 'सदावृध' के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है, तब इसका अर्थ सदा सर्वदा उत्तरोत्तर बढ़ने वाला, बदलने वाला होता है। जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय ज्ञान के लिये होता है, तब इसका अर्थ सदा 'अवृध' सदा एक रहने वाला, कभी भी न बदलने वाला, 'अद्वय', 'अदिति', 'अवर्धमान' होता है। जैसे 'विद्या' तथा 'अविद्या' वेद के विलक्षण शब्द हैं, वैसे 'सदावृध' भी वेद का विलक्षण शब्द है जो सदावृध के रूप में भौतिक विज्ञान के लिये प्रयुक्त हुआ है और 'सदा-अवृध' के रूप में ईश्वरीय ज्ञान या वेद के लिए प्रयुक्त हुआ है।

मुंडकोपनिषद् में इसी बात की चर्चा करते हुए कहा है- 'द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च'। 'परा' क्या है? यया तदक्षरं अधिगम्यते सा परा-अर्थात् जिस विद्या से अक्षर-ब्रह्म का ज्ञान होता है, वह 'परा-विद्या' है, अर्थात् 'आध्यात्मिक-विद्या'। इस कथन से स्पष्ट है कि जिस विद्या से क्षर प्रकृति के विषयों का ज्ञान होता है, वह 'अपरा विद्या' है अर्थात् 'भौतिक-विद्या'। यजुर्वेद के 19 वें अध्याय के 77 वें मंत्र में इसी भाव को 'सत्य' तथा 'अनृत्' इन शब्दों से व्यक्त किया गया है। वहाँ कहा है-

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धा सत्ये प्रजापतिः।।

संसार की सब वस्तुओं को देखकर प्रजापति ने उन्हें दो भागों में विभक्त कर दिया- 'सत्य' तथा 'अनृत्'। 'सत्य' में सब को स्वाभाविक रूप में श्रद्धा होती है। 'अनृत्' में सब को स्वाभाविक रूप में अश्रद्धा होती है। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेद में 'विद्या', 'सत्य', तथा 'परा' का एक ग्रुप बनाया है तथा 'अविद्या', 'अनृत्' एवं 'अपरा' का दूसरा ग्रुप बनाया है। यजुर्वेद में 'विद्या' तथा 'अविद्या'-इन दोनों की महिमा का बखान है- 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा'-अविद्या से मृत्यु को तरा जाता है। इससे स्पष्ट है कि वैदिक टर्मिनोलोजी में 'अविद्या' का अर्थ निरक्षरता या अज्ञान नहीं है। तो फिर वेद में 'अविद्या' का अर्थ क्या है? हमारी दृष्टि में वेद में 'अविद्या' का अर्थ भौतिकवाद या भौतिक विज्ञान है। भौतिक-आविष्कारों से मनुष्य संसार की सब सुख-सुविधाओं को भोगता हुआ, यंत्रों तथा औषधियों के आविष्कारों से दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की प्राप्ति कर सकता है, जिसे वेद ने 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा' कहा है। हमारा कथन है कि वेद में भौतिकवाद या वर्तमान-विज्ञान को यह उच्च स्थान नहीं दिया गया, जो अध्यात्मवाद को दिया गया है। भौतिक-ज्ञान दिनो दिन बदलता रहता है, 'वर्धमान' रहता है, 'वर्धमान' है इसलिए वेद ने उसे अविद्या, 'असत्य' तथा 'अपरा' विद्या कहा है। आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, 'अवर्धमान' है, इसलिए वेद ने उसे 'विद्या', सत्य तथा परा विद्या कहा है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वेदों में भौतिक विज्ञान का सर्वथा अभाव है। वेदों में भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विद्यायें हैं, परन्तु मुख्यता आध्यात्मिक विद्या की है, क्योंकि वही सत्य है, सनातन है, सब देशकाल में एक ही बनी रहती है।

हमारा मुख्य कथन यह है कि वेदों का मुख्य विषय अध्यात्मवाद है, भौतिकवाद या भौतिक विषयों का वेदों में गौण रूप से वर्णन आता है, इसलिए वेदों में दो विद्याओं का उल्लेख पाया जाता है- 'द्वे विद्ये वेदितव्ये' दो विद्याओं को जानना चाहिए- 'विद्या' तथा 'अविद्या', 'सत्य' तथा 'अनृत', 'परा' तथा 'अपरा'। यह बात ऋग्वेद (1.164.39) तथा अथर्ववेद (9.10.18) के निम्न मंत्र से और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्ते अमी समासते।।

ऋचाओं का स्थान परम-अक्षर परमात्म-वेद में है अर्थात् ऋचाओं में वर्णन परम-ब्रह्म परमात्म देव का है और उसी अध्यात्म का वर्णन अन्य देवताओं के रूप में किया गया है। जो इस रहस्य को नहीं जानता, वह वेद की ऋचाओं से क्या पा सकेगा? हम लिख आये हैं कि वेद में उदाहरण रूप में भौतिक विज्ञान का उल्लेख है। ऐसे स्थान हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि पृथिवी गोल है। 'इमं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः' इसी प्रकार यजुर्वेद (3.6) में लिखा है कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द चक्र काटती है तथा यजुर्वेद (३३.४३) से ज्ञात होता है कि लोक-लोकान्तर आकर्षण शक्ति से परस्पर बंधे हैं, परन्तु इन मंत्रों का आध्यात्मिक अर्थ करना ही उचित है। इन मंत्रों का अर्थ यह है कि भक्त भगवान की तरफ खिंचा-खिंचा उस से आकर्षित होकर उसी के गिर्द ऐसे चक्कर काटता है जैसे पृथ्वी सूर्य के गिर्द चक्कर काटती है। इसी भावना को मूल में रखते हुए हम वेद को ईश्वर प्रदत्त मानते हैं।

केवल वेद शास्त्र को जानने से ब्रह्मज्ञान नहीं हो सकता

❑**अध्यापक देवराज आर्य**, आर्य टेंट हाऊस, रोहतक मार्ग जींद-१२६१०२

यदि हमने केवल वेद पढ़ लिया या वेदोपदेश को सुन लिया, परन्तु उस पढ़े हुए या सुने हुए वेद ज्ञान पर क्रियात्मक रूप में कोई अमल नहीं किया तो ब्रह्म ज्ञान नहीं हो सकता। इसके लिए मनुष्य लोग जैसी प्रार्थना परमेश्वर से करें वैसा पुरुषार्थ भी करना चाहिए।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्।।
कठोपनिषत् २/२३

भाषार्थ :- (अयम्) यह (आत्मा) परमेश्वर (प्रवचनेन) पढ़ाने वा उपदेश करने की शक्ति से (न, लभ्यः) प्राप्त होने योग्य नहीं (न, मेधया) शास्त्र के सिद्धांत को धारण करने वाली बुद्धि से नहीं प्राप्त होता और (बहुना, श्रुतेन) बहुत शास्त्रों के पढ़ने वा बहुत से शास्त्रादि सम्बन्धी उपदेश सुनने से भी (न) नहीं प्राप्त होता। तो कैसे प्राप्त होता है, सो भी कहते हैं (एषः) यह मनुष्य (यमेव) जिस कारण परमात्मा की ही मन, वचन कर्म से एकचित होके (वृणुते) स्तुति, प्रार्थना करता तथा सब समय उसी के विचार का ध्यान करता, अन्य किसी को उपास्य नहीं मानता अर्थात् उसी की उपासना में तीन रहता (तेन) उस मनुष्य से (लभ्यः) प्राप्त होने योग्य है। (एषः, आत्मा) यह परमात्मा (तस्य) उस मनुष्य के लिए अपने (तनूम्) यथार्थ स्वरूप को प्रकाशित कर देता अर्थात् जता देता है।

भावार्थ :- वेदादि शास्त्रों में प्रवीण, उनके स्मरण रखने वाले, वेदों को पढ़ाने वा अनेक अभिप्रायः का उपदेश करने में कुशल तथा सुनने वाले लोग संसार में ही प्रतिष्ठित होते हैं। वेदशास्त्रों के जानने मात्र से ब्रह्म ज्ञान नहीं हो सकता किन्तु शास्त्रों को पढ़के उनमें लिखे अनुसार अनन्यचित्त होके जब ब्रह्म की उपासना करता है तब यह प्राणी आत्मज्ञान से होने वाले सुख का भागी होता है और प्रसन्न हुआ ब्रह्म भी उसके लिये अपने स्वरूप का प्रकाश कर देता है।

वह परमेश्वर जो कि सूक्ष्म से भी अत्यन्त सूक्ष्म है तथा आकाश, पृथिवी आदि बड़े-२ पदार्थों से भी सर्वत्र व्यापक होने से बड़ा, अनन्त है। इसके साथ ही जो इस चेतन शरीर के बीच हृदय के एक प्रान्त में (निहितः) स्थित है, ऐसे परमात्मा को केवल पुस्तकों में पढ़ने, पढ़ाने या उपदेश करने मात्र से प्राप्त नहीं किया जा सकता। धर्म शास्त्र की बातों और सिद्धान्तों को जानने से भी वह प्राप्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार बहुत से शास्त्रों को केवल मात्र सुनने से भी उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती, तो कैसे आचरण और व्यवहार से उसकी प्राप्ति होनी सम्भव है? उस ब्रह्म की प्राप्ति धर्मशास्त्र में पढ़े और सुने ज्ञान को कार्य व्यवहार में लाने तथा उसके अनुसार चलने से सम्भव है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताकर वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया। आओ जरा अपने जीवन का विश्लेषण करें कि हम में से कितने महानुभाव इस परम धर्म का पालन करते हैं। जब हम इस परम धर्म का पालन करने लगेंगे तभी हमें उस ब्रह्म के विषय में ज्ञान होगा कि वह कितना महान है।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ।। मुण्डके

यद्यपि परमेश्वर सबसे बड़ा है उससे अधिक बड़ा वा उसके तुल्य कोई नहीं है तो भी जगत् में प्रविष्ट निर्मल दर्पण में रूप दीखने के तुल्य शुद्ध अन्तः करण होने पर ही जिज्ञासु पुरुष को प्राप्त होता है।

यदि हमने केवल वेद पढ़ लिया या वेदोपदेश को सुन लिया, परन्तु उस पढ़े हुए या सुने हुए वेद ज्ञान पर क्रियात्मक रूप में कोई अमल नहीं किया तो ब्रह्म ज्ञान नहीं हो सकता। इसके लिए मनुष्य लोग जैसी प्रार्थना परमेश्वर से करें वैसा पुरुषार्थ भी करना चाहिए। अपना शुद्ध अन्तःकरण करने के लिए बताया गया है कि निम्नलिखित साधनों को जीवन में अवश्य धारण करें।

भाषार्थ : (यम्) जिस परमात्मा को (क्षीण दोषाः) जिनके राग, द्वेष और मोह रूप दोष नष्ट हो गये हैं वे अविद्यादि क्लेशों से रहित (यतयः) इन्द्रियादि को नियम में रखने वाले

योगी लोग (पश्यन्ति) ध्यान से देखते हैं अर्थात् अनुभव करते हैं वह (अन्तः शरीरे) शरीर के बीच हृदयाकाश में (ज्योतिर्मयः) ज्योतिस्वरूप (हि) ही अर्थात् उसमें अज्ञाना न्धकार का लेश भी नहीं (शुभ्र) शुद्ध, निर्मल (एषः आत्मा) योगियों को प्रत्यक्ष वह परमात्मा (नित्यम् सत्येन) नित्य प्रति सत्य बोलने (तपसा) निन्दा-स्तुति, शीत ऊष्णादि, द्वन्द्वों के सहने रूप नित्य किए तप से (सम्यग्ज्ञानेन) नित्य सेवन किये यथार्थ ज्ञान से और (ब्रह्मचर्येण) नित्य आठ प्रकार के मैथुन का त्याग वा उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से (लभ्यः) प्राप्त होने योग्य है।

भावार्थ :

किये खोटे कर्म तो ईश गुण गाने से क्या होगा।
किया परहेज ना कुछ तो दवा खाने से क्या होगा!
जीवन में सत्य नहीं है तो ब्रह्मज्ञान नहीं होगा। केवल सुनने मात्र से कभी दुःख शान्त नहीं होगा।।

साधनों के बिना किसी को सैकडों जन्म में भी केवल शास्त्रों के पढ़ने तथा उपदेश मात्र से उस ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती। फिर ब्रह्म ज्ञान के साधन क्या हैं? उत्तर में मुण्डक ऋषि कहते हैं कि -

जिन लोगों के आन्तरिक दोष अर्थात् राग, द्वेष, छल कपट तथा मोह रूप दोष नष्ट हो गये हैं, जो अविद्यादि पंच कलेशों से रहित होकर तीनों ऐषणाओं को त्याग देते हैं तथा जिनकी दशों इन्द्रियां मन के अधीन, मन बुद्धि के अधीन और मन आत्मा के अधीन होकर कार्य करता है, ऐसे ज्ञानी, विद्वान् और योगी लोग योगाभ्यास के द्वारा उस ज्योति स्वरूप परमात्मा का अपने हृदयाकाश में स्पष्ट अनुभव करते हैं। किन्तु जो लोग केवल वाणी से धर्म, सदाचार और सत्य का समर्थन करते हैं और आचरण धर्मानुकूल नहीं है, वे लोग तथा जो सुनते धर्मशास्त्रों की बातों को हैं परन्तु जीवन में यज्ञ, दान, तप और श्रद्धा आदि के भाव नहीं हैं। वे केवल ढोंग करते हैं। यह धर्म और ईश्वर के साथ छलावा है। ऐसे लोगों के जीवन को देखकर ही लोग वेद और ईश्वर से दूर हटते चले गये।

कैसा है वह ब्रह्म तथा कैसे हो उसका ज्ञान?

वह परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वान्तर्यामी, नित्य पवित्र है। सत्य अर्थात् यथार्थ ज्ञान के द्वारा ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में पांच सत्य, तप, ब्रह्मचर्य तथा वेद ज्ञान के निरन्तर नित्य प्रति सेवन करने से ही वह शुद्ध पवित्र ब्रह्म अपना शुद्ध स्वरूप जिज्ञासु के समक्ष पात्र समझकर प्रकट कर देता है। ये पाँच सत्य धारण करने से ही व्यक्ति आर्य बनता है। केवल मात्र कहने या सुनने से कोई भी व्यक्ति कभी भी विद्वान् या धार्मिक नहीं बन सकता, फिर ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

ये पांच सत्य हैं-

१ सत्य आहार : आहार के विषय में धर्मशास्त्र कहते हैं कि हमारा यह शरीर शुद्ध आहार पर विशेष निर्भर है। जब तक भोजन ऋत्, हित और मित नहीं है, तब तक बुद्धि कभी भी शुद्ध नहीं हो सकती। 'ऋत्' का अर्थ है हमारा आहार, सच्ची, शुद्ध पवित्र और परिश्रम की कमाई द्वारा प्राप्त होना चाहिए। यदि यह छल-कपट, चोरी, बेईमानी, मिलावट, रिश्वत एवं अपवित्र साधनों से कमाया गया है तो हमारा अन्तः करण इससे कभी शुद्ध नहीं हो सकता।

'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः'

आहार शुद्ध होने पर ही बुद्धि शुद्धि होती है तथा बुद्धि के शुद्ध होने पर ही उस परम ब्रह्म का ज्ञान सम्भव है। 'हित' हमारा भोजन शरीर को पुष्टि देने वाला हितकारी होना भी उतना ही आवश्यक है तथा 'मित' शरीर की आवश्यकतानुसार ही भोजन करें।

२ सत्य विचार : आहार के अनुरूप ही विचार बनता है। वर्तमान में जहाँ वायु, जल तथा अन्न प्रदूषित होता जा रहा है, इनके सेवन से विचार प्रदूषण सबसे अधिक बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण मानव दानव ही नहीं, राक्षस बन कर समाज को भयभीत कर रहा है। नास्तिकता बढ़ रही है। भूलते जा रहे हैं हम वेद शास्त्र और धर्म की मर्यादा को। केवल वाणी तक रह गया है विचारों का आदान-प्रदान।

३ सत्य व्यवहार :- जब हमारे विचार ही दूषित हो गये तो व्यवहार कहाँ से बढ़िया होगा? व्यवहार का हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में विशेष स्थान है। सर्वप्रथम हम अपने स्वयं के प्रति व्यवहार को लेते हैं। समय पर प्रातः काल उठना, सैर, व्यायाम, प्राणायाम आदि करना, स्नान, संध्या एवं पंच महायज्ञों को जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनाना ही प्रत्येक व्यक्ति के स्वयं के जीवन के प्रति सत्य व्यवहार है। इसी प्रकार अपने परिवार तथा समाज के प्रति प्रेम, सद्भावना, उदारता एवं सबकी उन्नति तथा प्रसन्नता के भाव रखना, समाज के दुःख-सुख को अपना समझ कर उसमे सम्मिलित होना सामाजिक सद्व्यवहार है। इसी प्रकार सुखी जीवन जीने के लिए आपसी लेन-देन का व्यवहार भी सत्य पर आधारित होना चाहिए। आज इस व्यवहार में मनुष्य प्रायःपतित होता जा रहा है। अपने पारिवारिक जन, मित्र, तथा सम्बन्धी (रिश्तेदार) जनों का भी आपस में कोई विश्वास नहीं रहा। जहाँ देखो, सब जगह व्यवहार शून्यता नजर आती है। मनुष्य के लोभ और अति स्वार्थ ने सद् व्यवहार को समाप्त प्रायः कर दिया है। (जारी)

जीवपनोपयोगी फल : जामुन

'आयुर्वेद शिरोमणि' **डॉ० मनोहरदास अग्रावत**
एन० डी० विद्यावाचस्पति, (प्राकृतिक चिकित्सक)

जामुन कृमि नाशक, रक्तप्रदर और रक्तातिसार का शामक है। जामुन का रस पीने से दस्त बंद हो जाती है। जामुन खून को साफ करता है और इसमें विजातीय तत्त्वों को शरीर से बाहर निकालने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

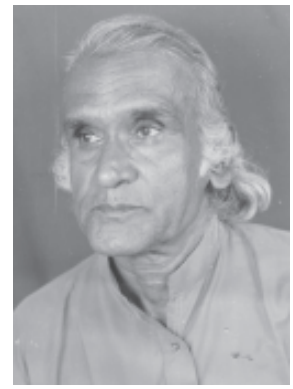

जामुन के वृक्ष भारतवर्ष में प्राय: सब जगह पैदा होते हैं। वनों में उगने वाली जामुन छोटी और खट्‌टी होती है और बगीचों में उगने वाली बड़ी और मीठी होती है। एक जामुन की जाति नदी किनारे लगती है जिसकी पत्ती कनेर के पत्तों जैसी होती है, इसे जल-जामुन कहते हैं। इस की दूसरी जाति के पत्ते आम के पत्तों के बराबर होते हैं और फल मध्यम होते हैं। इसकी तीसरी जाति के पत्ते पीपल के पत्तों के बराबर होते हैं और चिकने तथा चमकदार होते हैं। इसका फल बड़े जामुन के रूप में होता है। जामुन की कई किस्में हैं। कुछ जामुन के पत्ते मौलसिरी के पत्तों जैसे भी होते हैं। वैशाख और ज्येष्ठ मास में इनमें फल आते हैं, इसके फलों को जामुन कहते हैं। जामुन का रंग ऊपर से काला और अन्दर से लाल होता है। अन्दर इसमें गुठली होती है। गुणों में सभी जामुन फल एक जैसे गुणकारी होते हैं और बड़े स्वादिष्ट व मीठे होते हैं। जामुन के वृक्ष बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसकी लकड़ी चिकनी, सुंदर तथा कमजोर होती है। ग्रीष्म ऋतु के अन्त और वर्षा ऋतु के प्रारंभ में इसके फल झड़ते हैं, जिन्हें लोग इसकी गुठलियों के लिए संग्रह करते हैं। गुठली औषधियों में प्रयोग होती है।

जामुन को संस्कृत में जम्बू, सुरभीपला, महांस्कन्धवा, मेघमोदिनी, राजफला और शुकप्रिया कहते हैं। हिन्दी में जामुन, जामन, काला जामन, फलांदा और फलिंद कहते हैं। गुजराती में जांबू, बंगला में जाम, मराठी में जांभूल, तमिल में जंबुनावल, कर्नाटकी में नीरल या केंपुजं बीनेरलु, तेलिंगी में नेरेदु, मलयालम में नेतुजांबल या नावल, लैटिन में जांबोलेमन या सिज़िजीयम् और अंग्रेजी में जांबुल ट्री या जेम्बोल कहते हैं।

उपयोगिता और मान्यता

आयुर्वेद के अनुसार, जामुन की छाल कसैली, मल रोधक, मधुर, पाचक, रुक्ष, रूचिकारक तथा पित्त और दाह को दूर करने वाली होती है। इसके फल मधुर, कसैले, रूचिकारक, रूखे, मलरोधक, वातवर्धक और कफ, पित्त तथा अफरे को दूर करने वाले होते हैं। जामुन की गुठली मधुर, मलरोधक और मधुमेह (शक्कर की बीमारी) को नष्ट करती है।

चरक के शास्त्र में जामुन की छाल को मूत्रसंग्रह और पुरीष रंजनीय बतलाया है। सुश्रुत के शास्त्र में रक्त पित्त नाशक, दाहनाशक, योनिदोषनाशक, वृष्य और संग्रही माना है। वैद्य लोग जामुन के सिरके को पेट की पीड़ा का नाश करने वाला और मूत्र अधिक लानेवाला मानते हैं। जामुन कृमि नाशक, रक्तप्रदर और रक्तातिसार का शामक है। जामुन का रस पीने से दस्त बंद हो जाती है। जामुन खून को साफ करता है और इसमें विजातीय तत्त्वों को शरीर से बाहर निकालने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

निहीत तत्व व खनिज

जामुन के १०० ग्राम गूदे में लगभग ९४ ग्राम पानी होता है। १४ ग्राम कार्बोहाईड्रेट (शर्करा), १४ मि ग्रा कैल्शियम, १४ मिग्रा फास्फोरस और अल्पमात्रा में लोहा पाया जाता है। प्रोटीन की मात्रा 0.7 ग्राम, वसा की मात्रा 0.3 ग्राम होती है। कुछ महत्त्वपूर्ण खनिज तत्त्वों के साथ 0.9 ग्राम रेशे भी पाए जाते हैं। जामुन के रस में विटामिन 'सी' १० मिलीग्राम तथा कैरोटीन, थायमिन, रिबोफ्लेविन और नियासिन जैसे विटामिन भी मिलते हैं। इन सब तत्त्वों के कारण-जामुन के १०० ग्राम गूदे से ६२ कैलोरी उर्जा मिल जाती है।

कुछ औषधीय प्रयोग

(१) मधुमेह (डायबिटीज) पर- जामुन की गुठली और गुड़मार बूंटी, दोनो समभाग लेकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन ६ ग्राम चूर्ण गर्म पानी के साथ प्रात: सायं सेवन करने से मधुमेह रोग मिट जाता है।

(२) स्वप्नदोष पर- जामुन की गुठली पीसकर चूर्ण बना

लें, प्रातः सायं दो चम्मच (छः ग्राम) चूर्ण पानी से लें तथा रात्रि में दूध के साथ लेने से वीर्य गाढ़ा होता है, वीर्य के रोग दूर होते हैं तथा शीघ्रपतन व स्वप्नदोष मिट जाता है।

जामुन की गुठली पंसारी या हकीमी अत्तार की दुकान से जितनी चाहें उतनी प्राप्त की जा सकती हैं।

(३) शैया मूत्र पर– निद्रावस्था में बालक–बालिका, बहुत से बड़े हो जाने के बाद भी बिस्तर में पेशाब कर देते हैं। कोई बड़ी उम्र के भी पेशाब कर देते हैं, इसे शय्यामूत्र रोग कहते हैं, इसके उपचार में जामुन की गुठली को कूटपीस कर चूर्ण बनालें, इस चूर्ण को प्रातः सायं एक चम्मच फांककर पानी पीलें, ऐसा करने से एक हफ्ते में बिस्तर में पेशाब करना मिट जायेगा।

(४) पुरानी बैठी हुई गले की आवाज पर– जामुन की गुठली का चूर्ण आधा चम्मच शहद में मिलाकर प्रातः सायं लेने से पुरानी बैठी हुई आवाज साफ हो जाती है। गायकों, वक्ताओं के लिए यह उपचार लाभकारी है।

(५) मधुमेह में– जामुन की गुठली सूखी तथा सूखे आंवले दोनों को कूटपीस कर चूर्ण बना लें। दोनों समभाग (बराबर–बराबर) ले लें। प्रातः निराहार (खाली पेट) गाय के दूध के साथ ६ ग्राम (दो चम्मच) चूर्ण फांककर दूध पी लें। ऐसा कुछ दिन करने से मधुमेह रोग समाप्त हो जाता है।

(६) चर्मरोगों पर– जामुन की गुठली बारीक पीस कर नारियल के तेल में मिलाकर लगाने से चर्म रोगों में लाभ मिलता है।

(७) कान से पानी बहने पर– जामुन की गुठली को पीसकर सरसों के तेल में डालकर गरम करें। ठण्डा होने पर सूती कपड़े से छानकर शीशी भर लें। ड्रापर से कान में डालने से कुछ ही दिनों में कान बहना बन्द हो जाता है।

(८) मुंह के छाले– जामुन के नरम और ताजे पत्तों को पानी में पीसकर, और पानी बढ़ाकर कपड़े से छान लें, उस पानी से कुल्ले करने से मुंह के खराब से खराब छाले ठीक हो जाते हैं।

(९) बवासीर में– दस ग्राम जामुन के पत्तों को गाय के दूध में घोंटकर दस दिन तक प्रातः पीने से बवासीर में गिरने वाला खून बन्द हो जाता है।

(१०) अफीम का नशा– दस ग्राम जामुन के पत्तों को पीसकर पानी में मिलाकर पीने से अफीम का नशा उतर जाता है।

(११) जूते से काटने पर– अगर किसी के पाँव में चमड़े के जूते से काटने पर जख्म हो जाता है तो जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगाने से जख्म ठीक हो जाता है।

(१३) दस्त में– जामुन की गुठली व आम की गुठली से उसकी गिरी फोड़कर निकाल लें, दोनो समभाग लेकर चूर्ण बनालें, दूध के साथ इसकी फंकी लेने से लगातार आ रही दस्तें बन्द हो जाती है।

(१४) पेट में बाल या लोहे का अंश चला जाने पर पक्के जामुन खाना चाहिए, जामुन इन्हें पेट में गला देता है। जामुन खाना स्वास्थ्य वर्द्धक है।

(१५) पेट के रोगों में– पन्द्रह दिन तक लगातार दिन में जामुन फल खाने से पेट के रोगों का शमन हो जाता है और मधमेह की शिकायत हो तो वह भी मिट जाती हैं।

(१६) यदि **गर्भिणी स्त्री को अतिसार** (दस्तों) की शिकायत हो तो जामुन फल (पके हुए) खिलाने से राहत मिलती है। शांति मिलती है।

(१७) बिच्छु के दंश पर– जामुन के पत्तों का रस लगाना चाहिए।

–मनोहर आश्रम, स्थान– उम्मैदपुरा,
पो० तारापुर (जावद, म० प्र०) ४५८३३० जिला–नीमच

योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने के लिए सम्पर्क करें

योगाचार्य सूर्यदेव आर्य

आर्य युवा रत्न अवार्ड से सम्मानित

राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक, फर्स्ट एड लेक्चरर, प्रभाकर, बी एड, एन० डी० डी० वाई०, डी० वाई० एन०, डी० स्वास्थ्य संरक्षण (हैल्थ मैनेजमेंट) मुख्य प्रशिक्षक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा

सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद–१२६१०२
मो० ९४१६६ १५५३६, ९४१६७ १५५३७

जानते हो!

-आदित्य प्रकाश

❖आर्कटिक टर्न नाम का प्रवासी पक्षी हर साल लगभग ३५००० किलोमीटर की यात्रा कर लेता है।

❖एशियाई हाथी के केवल नर हाथी के ही दाँत होते हैं, जबकि अफ्रीकी हाथी के नर और मादा दोनों के हाथी दाँत होते हैं।

❖भारतीय जंगलों में भृंगराज नाम का ऐसा अद्‌भुत पक्षी पाया जाता है जो दूसरे पक्षियों और जानवरों की बोली की हूबहू नकल कर लेता है।

❖ऊंट की सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है। यह बहुत दूर से सूंघकर ही पानी का पता लगा लेता है।

❖प्लोवर नाम की नन्हीं चिड़िया मगरमच्छ के मुंह में बैठकर उसके दाँतों की सफाई करती है।

हास्यम्

-प्रतिष्ठा

★एक भिखारी ने होटल वाले के पास फोन किया और कहा कि एक पिज्जा, एक पेस्ट्री और दो समोसे भेज दो।
होटल मालिक- बिल किसके नाम से भेजूँ सर?
भिखारी-ऊपर वाले के नाम पर भेज दो।

★सोनू- तुम कौन सा साबुन लगाते हो?
मोनू- मैं कालू साबुन, कालू टूथपेस्ट और कालू पाउड़र ही लगाता हूँ।
सोनू- क्या यह कोई नया ब्रांड है?
मोनू- नहीं, कालू मेरा रूम मेट है।

★डाक्टर- कहो, तुम्हें क्या तकलीफ है?
मरीज- डाक्टर साहब, भोजन करने के बाद मुझे भूख नहीं लगती।

★सत्यव्रत- (सुरेन्द्र से) मैंने कल सपने में देखा कि मुझे नौकरी मिल गई है।
सुरेन्द्र- तभी तो तुम थके हुए से नजर आ रहे हो।

★विवेक-(राजू से) यार, सही पूछो तो मुर्गे आदमी से ज्यादा समझदार होते हैं।
राजू- वह कैसे?
विवेक-जब दो मुर्गे लड़ते हैं तो सैंकड़ों आदमी इकट्ठे हो जाते हैं लेकिन जब दो आदमी लड़ते हैं तो एक भी मुर्गा उन्हें देखने नहीं आता।

★मरीज (डाक्टर से) डाक्टर साहब मैं बार बार बेहोश हो जाता हूँ।
डाक्टर- मैं एक दवाई लिख देता हूँ। जब भी आप बेहोश हो जाएँ तो खा लेना।

बालवाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

✺ नित्य निरंतर चलता है वह
नहीं किसी से डरता है वह
कोई रोक नहीं पाता उसको
कोई पुनः नहीं पाता उसको।।

✺ बोली में गुण बहुत हैं,
पर मुझसे अच्छा कौन?
सारे झगड़ों को टाल दूँ
बतलाओ मैं कौन?

✺ आता है तो पुष्प खिलाता
पक्षी गाते गाना।
सभी को जीवन देता है
पर उसके पास नहीं जाना।।

✺ हरी कोठी है मेरी
उजली उजली धरती।
लाल लाल बिस्तर पर
काली मछली सोती।।

समर्थ, मौन, सूरज, तरबूज

विचार कणिका:

❒आस्था गुड्डू

✺ सुख-दुःख तो हमारी अपनी ही प्रतिध्वनि है। सुख देने से सुख मिलता है और दुःख देने से दुःख।

✺ दरअसल हमें दुनियाँ को नहीं, स्वयम् को जीतना है।

✺ कलह करने से अच्छा है, उपाय करें।

✺ हमारी प्रगति को रोकने में अगर कोई बाधक है तो वह है 'लघुता ग्रन्थि'। वरना तो पूरी दुनिया को हिला देने की शक्ति एक इंसान में भरी पड़ी है।

✺ धनवान बनना हो तो मन, वचन, काया से चोरी न करें।

✺ लालच एक अदृश्य पिंजरा ही है। लालच में फंसे कि पिंजरे में कैद हो गये।

✺ सभी का कल्याण हो-यह भावना सबसे पहले स्वयम् का ही कल्याण करती है।

✺ अपने सुरक्षित बचाव के लिये झूठ बोलोगे तो वाणी में बल कैसे रहेगा?

वैमानिकी विद्या (वायुयान संचालन) के प्रवर्त्तक महर्षि भारद्वाज

❒डॉ० भवानी लाल भारतीय

ऋषि दयानन्द ने इस तथ्य का सप्रमाण प्रतिपादन किया था कि पुरातन काल में भारत में आकाशमार्ग में विमान चलाने का प्रचलन था तथा वायु मार्ग से गमनागमन होता था। अपने ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के नौ विमानादि विद्या विषय शीर्षक प्रकरण में उन्होंने अनेक वेद मंत्रों के प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि आकाश मार्ग तथा जल मार्ग से यात्रा की जा सकती है। भारतीय इतिहास में भी ऐसे प्रमाण मिलते हैं जो आकाश मार्ग से चलने वाले विमानों के अस्तित्व का पता देते हैं। रावण को परास्त करने के पश्चात् राम का अपने परिचरों (लक्ष्मण, सीता, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि) सहित रावण के पुष्पक विमान से अयोध्या लौटना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि उस काल में विमानों के द्वारा आकाश मार्ग की यात्राएं सामान्यतया होती थीं। पुराणों में सर्वत्र देवताओं द्वारा विमानों के प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं।

विमान शास्त्र के प्रवर्तक महर्षि भारद्वाज माने जाते है। महर्षि भारद्वाज आचार्य बृहस्पति के पुत्र थे। इनकी माता का नाम ममता था। भारद्वाज की गणना सप्तर्षियों में होती है। इनके अतिरिक्त अन्य छः ऋषि हैं- अत्रि, जमदग्नि, वसिष्ठ, गौतम, वामदेव तथा विश्वामित्र। भारद्वाज ऋग्वेद के कतिपय मण्डलों के द्रष्टा भी थे। आपके द्वारा रचित बृहद् विमान शास्त्र का सम्पादित संस्करण स्वामी ब्रह्ममुनि ने तैयार किया था। यंत्र सर्वस्व नाम के इनके एक अन्य ग्रंथ में वैमानिक विज्ञान तथा आकाश तत्व पर प्रकाश डाला गया है।

वेदांगों पर आपके ग्रंथ हैं- भारद्वाज शिक्षा, भारद्वाज श्रौत तथा गृह्य सूत्र। विज्ञान के जिन सिद्धांतों के आधार पर विमान बनाये जाते थे, आकाश में उन्हें उड़ाया जाता था, इसका विशद विवेचन उनके ग्रंथों में पाया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में एक महाराष्ट्रीय सज्जन तळपदे ने मुम्बई की चौपाटी पर स्वदेशी तकनीक से बनाएअपने विमान का प्रदर्शन किया था।

प्रेरक प्रसंग

मन ही तीर्थ है

❒प्रतीक सोनी

जीवन में मनुष्य पाप करता है और सोचता है कि तीर्थों पर जाने से उसके पाप धुल जाएँगे, यह एक भ्रम का विचार है। इस विषय में महाभारत की एक घटना है-

एक बार पाण्डवों ने अपने पापों को धोने के लिए तीर्थ यात्रा करने की सोची और वे श्रीकृष्ण के पास आशीर्वाद लेने के लिए गए। श्री कृष्ण ने उन्हें रोका तो नहीं, पर उन्हें एक तुम्बी दे दी और कहा कि जा तो रहे ही हो, मेरी तुम्बी को भी स्नान करा देना।

पाण्डवों ने श्रीकृष्ण की आज्ञा स्वीकार की। वे तीर्थ यात्रा से लौटे। श्रीकृष्ण ने उनकी कुशल क्षेम पूछी। फिर अपनी तुम्बी के बारे में पूछा। पाण्डवों ने प्रसन्न हो कर कहा- हाँ, महाराज, हमने आपकी तुम्बी को भी भली भाँति स्नान करा दिया था।

श्री कृष्ण ने तुम्बी को पीसकर चखा। उन्होंने उसे पाण्डवों को भी चखने को कहा। सबके मुँह कड़वे हो गए। सबने एक साथ कहा- बहुत कड़वी है यह तो।

अब श्रीकृष्ण ने समझाया- जैसे स्नान कराने से तुम्बी बाहर से तो साफ हो गई, परन्तु इसके अन्दर की कड़वाहट नहीं गई। ऐसे ही तीर्थ स्नान करने से शरीर तो साफ हो सकता है, मन साफ नहीं हो सकता। मन तो सत्य से शुद्ध होता है और सत्य से ही पाप के संस्कार धुलते हैं। जो पाप या पुण्य हम कर चुके हैं, उनका फल तो हमें अवश्य मिलेगा, पर मन शुद्ध होने से हमारी प्रवृत्ति पाप करने से हट जाएगी और हम आगे पाप करने से हट जाएँगे।

मनुष्य अपने कर्मों से ही पवित्र बनता है। जिसका मन शुद्ध है, जिसके कर्म पवित्र हैं, जो परोपकार करता है, जो सभी प्राणियों में अपनी आत्मा जैसा आत्मा समझता है, वही पवित्र होता है। सच्चे तीर्थ तो माता, पिता, आचार्य, विद्वान्, सत्संग, स्वाध्याय और सत्य का आचरण हैं, जिनके कारण मनुष्य तर जाता है। महर्षि मनु ने भी कहा है-

जल से शरीर शुद्ध होता है।
सत्य से मन शुद्ध होता है।
विद्या और तप से अन्तरात्मा शुद्ध होती है।
ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है।

मालिन की देशभक्ति

प्रस्तुति : **नरेन्द्र कुमार आर्य**

बस, बंद करो बकवास, आगे और कुछ कहा तो जबान काट लूंगी। इस देश के निवासी महत्त्वाकांक्षाओं के लिए कर्त्तव्य की हत्या करना नहीं जानते। हम प्राण दे सकते हैं, अपने कर्त्तव्य से एक इंच भी डिग नहीं सकते।

मगध के सिंहासन पर तब सम्राट इन्द्रगुप्त आसीन थे। महाकौशल से उनकी शत्रुता हो गई। महाकौशल की शक्ति और सैन्यबल उन दिनों चरमोत्कर्ष पर था। वहाँ से किसी भी क्षण आक्रमण की पूरी आशंका थी। यह बात मगध के एक-एक नागरिक को मालूम थी। इसलिए कोई भी रात में बाहर न निकलता। सारी प्रजा युद्ध की आशंका से भयभीत थी।

मगध के सैनिक पूरी तत्परता के साथ सीमा चौकियों की रक्षा कर रहे थे, पर आपात्कालीन स्थिति हो तो किसी भी व्यक्ति को चुप नहीं बैठना चाहिए, चाहे वह राजा हो या प्रजा। इन्द्रगुप्त स्वयं इस आदर्श का पालन कर रहे थे। वे रात-रात भर जागकर प्रजा की रक्षा व्यवस्था देखा करते थे।

तब, जब मगध के युवक और प्रौढ़जन भी भयवश अंधकार में बाहर नहीं निकलते थे, एक स्त्री घर से बाहर निकलती। वह राजदरबार की मालिन थी। सम्राट और साम्राज्ञी दोनों प्रातःकाल पीयूष वेला में पूजन किया करते थे। उसके लिए शुद्ध और ताजे पुष्पों की आवश्यकता होती थी। मालिन ने अपने इस कर्त्तव्य पालन में इन गाढ़े दिनों में भी भूल नहीं की। वह प्रतिदिन पूजा के पुष्प नियमित रूप से पहुँचाती रही। किसी को अंगुली उठाने का अवसर नहीं मिला कि मालिन डरकर अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर रही।

प्रातःकाल होने में अभी देर थी। महाराज इन्द्रगुप्त भ्रमण करते हुए उधर ही आ निकले, जहाँ उस मालिन का निवास था। अंधकार में कुछ आकृतियाँ उधर घूमती दिखाई दी। महाराज को संदेह हुआ, वह चुपचाप झुरमुट में खड़े होकर स्थिति का अध्ययन करने लगे। भवन के बाहर पदचाप सुनकर मालिन की निद्रा टूट गई। उसने समझा प्रातःकाल हो गया है, सो फूल चुनने की पेटिका उठाकर वह घर से बाहर आई, पर यहाँ तो स्थिति कुछ और ही थी। महाकौशल के चार गुप्तचरों ने उसे बाहर आते ही घेर लिया। किसी तरह उन्हें पता चल गया था कि मालिन नियमपूर्वक राज्यभवन में प्रवेश करती है, उसे वहाँ की सारी व्यवस्था का पता होगा, इसलिए प्रातः होने से पूर्व ही यह दल वहाँ पहुँचा था।

नारी के कोमल नहीं, कठोर शब्द निकले-

'कौन हो तुम? इतनी रात गए यहाँ क्या कर रहे हो?'

'भद्रे! हम आपके अतिथि हैं। आपकी सेवा पाने का अधिकार लेकर आए हैं, यदि वह अधिकार उपलब्ध हो गया तो आप महाकौशल की सम्मानित महिलाओं में होंगीं। धन, वैभव आपके चरणों पर ऐसे लोटेगा, जैसे नागराज के चरणों में सिन्धु का जल।' गुप्तचर ने धीमे स्वर में कहा।

'महाकौशल! और मैं-? मेरा महाकौशल से क्या संबंध? साफ-साफ कहो, क्या चाहते हो?' मालिन ने पीछे हटते हुए दृढ़ स्वर में पूछा।

'हम महाकौशल के सैनिक हैं, मगध राज्य का रहस्य ज्ञात करने के लिए आए हैं। उसकी जानकारी भर आपको देनी है, उसके बदले महान् ऐश्वर्य की स्वामिनी बनोगी।'

और इससे पूर्व कि वह कुछ और कहें, मालिन ने तड़पकर कहा- 'बस, बंद करो बकवास, आगे और कुछ कहा तो जबान काट लूंगी। इस देश के निवासी महत्त्वाकांक्षाओं के लिए कर्त्तव्य की हत्या करना नहीं जानते। हम प्राण दे सकते हैं, अपने कर्त्तव्य से एक इंच भी डिग नहीं सकते।'

गुप्तचर चिल्लाया- 'मूर्ख स्त्री! ऐसा ही है तो उसका फल तू ही भुगतेगी।' फिर अपने साथियों की ओर देखकर उसने आज्ञा दी- 'पकड़ लो इसे, डाल दो मुश्कें। जब लौह शलाकाओं से छेदा जाएगा, तब कर्त्तव्यनिष्ठा याद आएगी।'

इससे पूर्व कि सैनिक उसे हाथ लगाएँ-महाराज इंद्रगुप्त झुरमुट से बाहर निकल आए। मगध और महाकौशल की पहली झड़प वहीं हुई। कर्त्तव्यनिष्ठ मालिन की रक्षा के लिए महाराज इन्द्रगुप्त ने चारों सैनिकों को वहीं धराशायी कर दिया।

भजनावली

रचना तुम्हारी भगवन् देखी बड़ी निराली।
दुनिया ये बाग तेरा, तू ही है इसका माली।।
सूरज व चाँद तारे, तूने बनाए सारे।
चलते हैं न्यारे न्यारे, करते बड़ी उजाली।।१।।
सागर पहाड़ तेरा, गुलशन उजाड़ तेरा।
दरिया की बाढ़ तेरा, दे पत्ता डाली-डाली।।२।।
कहीं भूमि झुलस रही है, जल को तरस रही है।
कहीं वर्षा बरस रही है, बहते हैं नाले नाली।।३।।
कहीं पक्षी चहचहा रहे, मीठे स्वर में गा रहे।
जंगल में सिंह दहाड़े, अजगर फुंकार काली।।४।।
माँ के गर्भ के अन्दर, पशु-पक्षी मनुष्य बन्दर।
सूरत बनाई सुन्दर, मन को लुभाने वाली।।५।।
हरद्वारीलाल देखा, हर दर कमाल देखा।
तेरा जलाल देखा, कोई जगह न खाली।।६।।

शरण प्रभु की जाया कर

बड़े सवेरे जागकर, विषय वासना त्यागकर,
प्रभु भक्ति में लागकर, तू जीवन सफल बनाया कर।।
सोने वाले नींद त्याग फिर समय ये बीता जाता है।
समय ये बीता जाता है।।
जो सोता है सो खोता है रोता और पछताता है।
रोता और पछताता है।
फिर सोने से क्या होयेगा, जब समय अमोलक खोयेगा
वही काटेगा जो बोएगा, तू अच्छे कर्म कमाया कर।।१।।
ब्रह्ममुहूर्त्त अमृत बरसे उसको जो नर पाता है,
उसको जो नर पाता है,
रोग शोक मिट जाएँ सारे जन्म मरण कट जाता है।
जन्म मरण कट जाता है।
वेदों ने यही बताया है, ऋषि मुनियों ने अजमाया है,
योगीजनों ने पाया है, तू भी ध्यान लगाया कर।।२।।
पद्मासन चाहे सुखासन से सीधा होके बैठा कर।
सीधा होके बैठा कर।
भृकुटी में ध्यान लगा फिर चमक निराली देखा कर।।
चमक निराली देखा कर।।
कुछ दिन में रोशनी आयेगी, अज्ञान अंधकार मिटायेगी,
जो मार्ग तुझे दिखाएगी तू उस पर कदम बढ़ाया कर।।३।।
गायत्री का जाप किया कर मन मन्दिर में जाकर तू।

महाशय हरद्वारीलाल आर्य (महात्मा हरिदेव जी)
संस्थापक : गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर रोहतक

जन्म : ज्येष्ठ शुक्ला १०, १९७० विक्रमी
देहावसान : २० दिसम्बर १९९२

मन्दिर में जाकर तू।
अपनी खुद आवाज सुनाकर जग से कान हटाकर तू।
जग से कान हटाकर तू।
फिर अनहद बाजे बाजेंगे, साज सुरीले साजेंगे,
तेरे दु:ख द्वन्द्व सब भाजेंगे, संशय भ्रम मिटाया कर।।४।।
तज विषय भोग कर योग रोग से पीछा तेरा छुट जायेगा।
पीछा तेरा छुट जायेगा।
हरद्वारीलाल कर ख्याल चाल फिर ऊँचा तू उठ जायेगा।
फिर ऊँचा तू उठ जायेगा।
ना मान अपमान सतायेगा, ना काम और क्रोध दबायेगा,
तेरा जीवनमुक्त हो जाएगा तू शरण प्रभु की जाया कर।।५।।

बालक के जन्म दिवस पर

विनती ये हमारी स्वीकार भगवान हो।
तेजस्वी बलकारी बालक ये आयुष्मान हो।।
करुणाकन्द हो, पूर्णिमा का चन्द हो।
ऋषि दयानन्द सा ब्रह्मचारी वेदों का विद्वान् हो।।१।।
बांका हो समर में, दुनिया भर में,
कर में ले तेज कटारी, दुष्टों का घमासान हो।।२।।
अपने कुल को लेजा ऊँचा,फूले फले परिवार बगीचा
सच्चा हो व्यापारी, धरमधारी धनवान हो।।३।।
वेदों का प्रकाश फैलावे, अविद्या अंधकार मिटावे
गावे यश हरद्वारी दुनिया में भारी मान हो।।४।।

वेदप्रचार कर मलेशिया व सिंगापुर से वापिस आये आचार्य आनंद पुरुषार्थी

17 दिनों के प्रवास के उपरांत नर्मदांचल के वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनंद पुरुषार्थी होशंगाबाद वापिस आ गए हैं। 3 मई से 20 तक आप के सिंगापूर व मलेशिया के लक्ष्मी नारायण मंदिर, आर्य समाज मंदिर सहित अनेक स्थानों पर वेदों के सिद्धांतों पर प्रवचन हुए। इस्कान विचारधारा के बांग्लादेशी हिन्दुओं में विशेष रूप से आपको अपनी बात कहने का अवसर मिला। सिंगापूर में भारत की महामहीम राजदूत श्रीमती विजय ठाकुर सिंह जी व सिंगापूर के लोक सभा के पूर्व उपाध्यक्ष सरदार इन्द्रजीत सिंह (वर्तमान सत्ताधारी पीपुल्स एक्शन पार्टी के वरिष्ठ सांसद) से पुरुषार्थी जी ने पृथक् पृथक् मुलाकात की। दोनों को आर्यसमाज का वैदिक साहित्य भेंट किया। 1 व 2 नबम्बर 2014 में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में दोनों को आमंत्रित किया। दोनों ने ही स्वीकृति प्रदान की। मलेशिया के लक्ष्मी नारायण मंदिर में उपदेश के बाद प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान श्री रमेश भाई ओझा जी से भेंट की उनको भी वैदिक साहित्य भेंट किया।

–आर्य रामावतार सिंह राजपूत

आर्यसमाज भीमगंज मंडी, कोटा जंक्शन

त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उक्त आर्य समाज का वार्षिक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिसमें आर्यजगत् के ख्यातिप्राप्त विद्वान् आचार्य डॉ० शिवदत्त पाण्डे के वेद प्रवचन व पं० नरेश जी निर्मल के भजनोपदेश हुए। प्रात:कालीन सभाओं में यज्ञ का आयोजन भी किया गया, जिसमें सभी कार्यकारिणी सदस्यों व अन्य श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। (ओमदत्त गुप्ता, मंत्री)

सर्वसम्मति से चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग उदयपुर, का चुनाव श्री अरविन्द त्यागी चुनाव अधिकारी द्वारा कराया गया। श्री सुरेशचन्द्र चौहान, प्रधान; लाजपतसिंह चौहान व मनोरमा गुप्ता उपप्रधान; कैलाश मौर्य, मंत्री; फतहलाल शर्मा, उपमंत्री; सत्यप्रिय आर्य प्रचारमंत्री; यशवंत श्रीमाली, कोषाध यक्ष व दीनदयाल शर्मा निर्विरोध पुस्तकालयाध्यक्ष चुने गए। पूर्व प्रधान श्री प्रकाश श्रीमाली ने नवीन कार्यकारिणी को बधाई देते हुए समाज सेवा के कार्यों से जुड़ने का आह्वान किया। डॉ० प्रेमचन्द गुप्त ने पारिवारिक यज्ञों और संस्कारों को संस्कारित समाज रचना में महत्त्वपूर्ण बताया। इससे पूर्व यज्ञ, प्रार्थना, ऋषि जीवन पाठ एवं प्रवचन हुए। अन्त में मंत्री श्री कैलाश मौर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

नया उत्साह! ओ३म् नई खुशी!!

MAHARSHI DAYANAND EDUCATION INSTITUTE, BOHAL

Under the Control & Management of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
(Establish with the Permission of Haryana Govt. vide Sr. Act XXI of 180 Govt. of India)

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANIZATION

202, OLD HOUSING BOARD, BHIWANI-127021 (HAR)

JOB ORIENTED SELF EMOLOYED I.T.I., N.T.T. & OTHER DIPLOMA COURSE

करने व फ्रेंचाईजी लेने के लिए सम्पर्क करें।

संस्थान के सभी कोर्स आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी बनाने व रोजगार दिलाने में सहायक हैं।
संस्थान से I.T.I. कोर्स किये अनेक विद्यार्थी सरकारी/गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं।

बोहल कार्यालय सम्पर्क सूत्र :
09728004587, 09813804026
Website : www.grngo.org

सचिव : नरेश सिहाग, एडवोकेट
चैम्बर नं. 175, जिला अदालत, भिवानी–127021 (हरि.)
09255115175, 09466532152

प्रगति के पथ पर अग्रसर कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

सादगीपूर्ण व सात्त्विक वातावरण में विद्याभ्यास करती हुई 16 प्रांतों की 626 छात्राएँ शैक्षिक व क्रीडाक्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

❖२०१३ का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत। विश्वविद्यालयी परीक्षा में ९० प्रतिशत मैरिट।

❖शास्त्री, आचार्य एवं एम० ए० की परीक्षाओं में २७ स्वर्ण पदक गुरुकुल की छात्राओं को।

❖दिल्ली वि० वि० में गुरुकुल की छात्रा का सहायक प्रोफैसर के रूप में चयन।

❖कुल ५२ छात्राओं द्वारा UGC परीक्षा उत्तीर्ण, ३३ छात्राओं ने JRF और १९ ने NET परीक्षा उत्तीर्ण की है। ❖गुरुकुल की छात्रा कु० वन्दना ने IAS २०१३ में ८ वाँ स्थान प्राप्त किया।

❖ श्रीमन्नारायण स्मृति स्पर्द्धा (दिल्ली), परोपकारिणी सभा व पतंजली योगपीठ द्वारा आयोजित वेद शास्त्र कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक, प्रथम व द्वितीय पुरस्कार। ❖राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा २०११, १२, १३, १४ में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय पुरस्कार। ❖म० द० विवि द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।

क्रीड़ा–क्षेत्र की उपलब्धियाँ

❖अक्तूबर २०१३ में बदायूं में आयोजित 'तृतीय उत्तर प्रदेश तीरंदाजी' प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्राप्त किये गए।

❖उत्तरप्रदेश योग एसोसिएशन द्वारा मेरठ में आयोजित ३१ वीं राज्य योग चैम्पियनशिप में विभिन्न आयु वर्ग में ५ स्वर्ण पदक और ४ रजत पदक।

❖नवम्बर २०१३ में ३८ वीं राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में 'आर्टिस्टिक पेयर' में रजत पदक।

❖धनुर्विद्या की विभिन्न प्रतियोगिताओं में गुरुकुल की छात्राएँ अब तक १६४ स्वर्ण, १४४ रजत एवं १०५ कांस्य पदक जीत चुकी हैं।

❖गुरुकुल की छात्राओं ने धनुर्विद्या में वर्ल्ड कप, ओलम्पिक, एशियन खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया और सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के रूप में पुरस्कुत हुई हैं। ओलम्पिक धनुर्धारिणी कु० सुमंगला को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है।

गुरुकुल सभी सहयोगियों का आभारी है।

श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा
पो० रजबपुर–२४४२३६ (उ० प्र०)

+91-5922-245208, +91-94123-22258, e-mail: gurukulchotipura@yahoo.com

प्रशंसा और प्रोत्साहन-- पृष्ठ १६ का शेष

संसार प्रेम की सुंदरता उधार लेता है और स्वर्ग इसकी महिमा उधार लेता है। न्याय, संयम, परोपकार और करुणा प्रेम की संतानें हैं। 'प्रेम के बिना सारा यश फीका पड़ जाता है, संगीत अपना अर्थ खो देता है और सद्‌गुणों का अस्तित्व मिट जाता है।'

अगर हम उन मनुष्यों के जीवन पर दृष्टिपात करें जिन्होंने इतिहास में अपना नाम अमर बना लिया है और जीवन में सर्वोच्च सफलता हासिल की है तो उसका मूल कारण है – प्रेम और त्याग की मूल भावना।

मनोचिकित्सक **आरीकियेव** ने कहा है, 'अगर आप यह चाहते हैं कि दूसरे आपका सम्मान करें तो आपको उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करना चाहिये। हमेशा लोग उस व्यक्ति के प्रति अपना प्रेम, सम्मान और ध्यान प्रदर्शित करेंगे, जो उनकी इस आवश्यकता की पूर्ति करेगा।

विश्व बैंक के पूर्व अध्यक्ष **राबर्ट मैकनामारा** कहते हैं कि 'मस्तिष्क हृदय की तरह होते हैं, वे वहीं जाते हैं, जहाँ उनकी सराहना होती है।' किसी भी व्यक्ति को किसी कार्य के लिये श्रेय और पहचान दी जाती है तो उक्त व्यक्ति में उच्च कोटि के परिश्रम से कार्य करके आत्मसम्मान पाने की इच्छा प्रबल हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक **जे० सी० सरेहल** ने कर्मचारियों की मानसिकता पर अनेक शोध किये हैं। सरेहल का मानना है कि कर्मचारियों में असंतुष्टि और शिकायत करने का सबसे बड़ा कारण है कि उनके अधिकारी उन्हें किसी भी कार्य के लिए श्रेय नहीं देते। लोगों के लिये किसी ऐसे व्यक्ति के पीछे चलना कठिन होता है जो उनमें रूचि नहीं रखता और उनके कार्य की सराहना नहीं करता।

किसी भी व्यक्ति में कोई अन्य पहलू इतना आत्मविश्वास, सम्मान और कुछ कर दिखाने का साहस एवं प्रेरणा नहीं भरता, जितना कि सार्वजनिक सम्मान। निश्चित रूप से सार्वजनिक सम्मान किसी विशिष्ट कार्य करने पर उक्त व्यक्ति को दिया जाता है।

नेतृत्व और मानवीय गुणों पर आधारित दो महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक **मेजर जनरल ए० आर० न्यूमैन** का कहना है कि अच्छे नेतृत्व और सफलता के लिए अच्छे विचार, सही निर्णय तथा सुनिश्चित उद्‌देश्य का होना आवश्यक तत्व है। जब आप अपने कर्मचारियों के साथ मीटिंग में हों तब प्रशंसा करने के किसी भी अवसर को हाथ से न जाने दें। इस समय आप उन्हें अत्यधिक महत्वपूर्ण होने तथा उन्हें बेहतर काम और उनके व्यवहार के लिए बेहद पसंद करने का एहसास दिला सकते हैं।

स्वामी देवानन्द जी के अथक प्रयासों का परिणाम है गुरुकुल

गुरुकुल आर्यनगर में स्वामी देवानन्द जी की पुण्यतिथि मनाई गई।

कार्यालय प्रतिनिधि

स्वामी देवानन्द सरस्वती ने गुरुकुल आर्य नगर की स्थापना कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को जीवंत रखने का सार्थक प्रयास किया। उनके पुण्य प्रताप से ही आज यह गुरुकुल अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है। हम स्वामी जी के पवित्र और कर्मठ जीवन से प्रेरित होकर उनके शिक्षित राष्ट्र के स्वप्न को साकार करने के लिए अपना योगदान करें। ये विचार गुरुकुल आर्यनगर के संस्थापक आचार्य एवं वर्तमान मुख्याधिष्ठाता आचार्य रामस्वरूप शास्त्री ने स्वामी जी की २९ वीं पुण्य तिथि के अवसर पर २० मई को गुरुकुल में आयोजित श्रद्धांजली सभा में व्यक्त किये। प्राचार्य मानसिंह पाठक ने बताया कि स्वामी देवानन्द का जन्म हिसार जिले के मात्रश्याम ग्राम के एक सामान्य परिवार में हुआ। उनके जीवन पर आर्यसमाज का विशेष प्रभाव था। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षित राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी भाग लिया। उन्होंने १३ अप्रैल १९६४ को हिसार जिले के पहले गुरुकुल के रूप में गुरुकुल आर्यनगर की स्थापना की। आज स्वामीजी द्वारा लगाया गया पौधा वटवृक्ष बन चुका है। आज गुरुकुल के पढ़े हुए स्नातक विश्व भर में विभिन्न विश्वविद्यालयों, विद्यालयों, सुरक्षाबलों, योग व चिकित्सा के सरकारी एवं गैरसरकारी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान और वर्तमान में सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी भी इसी गुरुकुल के स्नातक हैं।

स्वामी देवानन्द जी ने अपना पूरा जीवन शिक्षा को समर्पित किया। २० मई १९८५ को एक सड़क दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। सभा में कार्यकारी प्रधान पं० रामजीलाल पूर्व सांसद, अधिवक्ता लाल बहादुर खोवाल, इन्द्रदेव शास्त्री, स्वामी सर्वदानन्द, ब्र० दीपकुमार, अभिमन्यु आदि ने भी स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

क्रांति की बलिवेदी पर-- पृष्ठ १३ से आगे

दण्डित होती रही है, वह इस (आर्य) समाज का ही सदस्य रही है।'

यह बात अन्य राज्यों के विषय में भी उतनी ही सत्य है, पर देश के स्वतंत्रता संग्राम को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले आर्यसमाज ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीति के प्रति जो उदासीनता दिखाई, उसी का परिणाम है कि इतिहास के पृष्ठों से उसके योगदान को गायब कर दिया गया। यह कैसी दयनीय अवस्था हो गई है कि हमें यह विशेषकर लिखना पड़ता है कि स्वतंत्रता संग्राम में लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल आदि आर्य समाजी थे। भगतसिंह, सुखदेव, जयदेव कपूर, सुशीला दीदी आदि की पारिवारिक पृष्ठभूमि आर्य समाजी थी। महावीर सिंह, सोहनलाल पाठक, पं० गेंदालाल दीक्षित डी० ए० वी० से जुड़े हुए थे। कहने का अभिप्राय है कि जनता इनका नाम सुनते ही इन्हे आर्य क्रांतिकारी के रूप में क्यों नहीं जानती? यदि स्वतंत्र होते ही आर्य समाज ने राजनीति में प्रवेश किया होता, तो गोहत्या बन्दी, शिक्षा का पाठ्यक्रम आदि लागू करके राजनीति का शुद्धिकरण हो गया होता, इसके विपरीत राजनीति ने आर्य समाज में घुसकर इसे वर्तमान दशा (दुर्दशा) में पहुँचा दिया।

जयदेव कपूर कानपुर के डी० ए० वी० कालेज में शिववर्मा के मित्र बने और शचीन्द्रनाथ सान्याल के 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' से जुड़ गये। बाद मे भगतसिंह इनसे मिले और कानपुर में क्रांतिदल खड़ा करने का उत्तरदायित्व सौंपा। धार्मिकता व सामाजिकता के नाम पर चालाक लोगों व अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले शोषण व अत्याचार छूआछूत, बन्धुआ मजदूरी आदि को देखकर इन नौजवानों का मन उस व्यवस्था के प्रति विद्रोही हो गया। वैसे इन (शोषणों) का विरोध आर्यसमाज वर्षों से कर रहा था पर रूसी क्रांति की सफलता ने (१९१७ ई०) इन नौजवानों को अपनी ओर आकर्षित किया। समाजवादी साहित्य से प्रभावित होकर भगतसिंह ने 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' में 'समाजवादी' शब्द जोड़ने का सुझाव रखा और उसका जोरदार समर्थन किया, जयदेव कपूर ने।

क्रांतिदल ने जोगेशचन्द्र चटर्जी को छुड़ाने के लिए बम धमाने की योजना बनाई थी, पर परिस्थिति को देखते हुए चन्द्रशेखर आजाद ने बम फेंकने का आदेश ही नहीं दिया। तब इस असफलता पर सबसे अधिक दु:खी हुआ था जयदेव कपूर। आजाद ने उसे समझाते हुए कहा कि इतनी पुलिस को देखते हुए जोगेशचन्द्र को छुड़ा पाने की कोई संभावना नहीं थी। ऐसी दशा में मुझे अपने साथियों को मौत के मुंह में धकेलना उचित नहीं लगा।

एक बार फिर बम जयदेव कपूर के हाथ में ही रह गया, जब क्रांतिकारियों ने लार्ड इरविन की गाड़ी उड़ाने की योजना बनाई थी। राजगुरु को संकेत करना था और जयदेव को बम फेंकना था, पर राजगुरु ने संकेत ही नहीं किया। क्योंकि गाड़ी में वायसराय नहीं, केवल तीन महिलाएँ थीं।

केन्द्रीय विधानसभा में भगतसिंह ने जो बम (८ अप्रैल १९२९) फेंके, उसकी योजना को क्रिया रूप देने में सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया था जयदेव ने। यहाँ भी बम उसके हाथ से फिसल गया, क्योंकि उसका नाम हट गया और भगतसिंह व बटुकेश्वर दत्त को यह काम सौंपा गया, पर बम बनाने, उसे आगरा से दिल्ली लाने, केन्द्रीय विधान सभा के अन्दर जाने के लिए प्रवेश पत्र जुटाने, भगतसिंह और बी० के० दत्त को उनके लिए नियत कुर्सियों तक पहुँचाने का काम जयदेव कपूर ने ही किया था और वह भी इतनी कुशलता से कि किसी को सन्देह भी नहीं हुआ।

बम बनाने का कारखाना दिल्ली से सहारनपुर भेज दिया गया और उसकी जिम्मेवारी सौंपी गई डॉ० गयाप्रसाद, शिववर्मा और जयदेव कपूर को। वहाँ ये तीनों पकड़े गये। लाहौर जेल में भगतसिंह आदि के साथ भूख हड़ताल में साथ रहे। बाद में विजयकुमार सिन्हा, कमलनाथ तिवारी, किशोरीलाल और महावीर सिंह आदि के साथ इन तीनों को आजीवन कारावास की सजा हुई।

जयदेव कपूर को दक्षिण भारत में राजमहेन्द्री जेल में भेज दिया गया। वहाँ एक बार अंग्रेज जेलर ने उन पर हाथ चला दिया। जेलर का काम गैर-कानूनी था। जयदेव के हाथों में हथकड़ी पड़ी थी, फिर भी इन्होंने उन्हें घुमाकर जोर से जेलर के मुंह पर दे मारा।

जेलर के दो दाँत टूट गये। इसके लिए जयदेव को २० बेंतों की सजा दी गई। यह वीर हर बेंत की चोट पर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का जयघोष करता रहा।

इसके बाद इस क्रांतिवीर को महावीर सिंह के साथ कालापानी भेज दिया गया। उस नरक में महावीर सिंह, मोहित मित्र और मोहन किशोर तो शहादत का जाम पी गये, पर जयदेव कपूर, बी० के० दत्त आदि १९३७ ई० में वहाँ से भारत भूमि पर पहुँचे। बाद में भी ये बिना मुकदमा चलाये कैद किये गये। पता नहीं, उनके साथियों का (जो फाँसी चढ़ कुछ क्षण में मुक्ति पा गये) बलिदान अधिक था, या उनका जो वर्षों जेल की यातनाओं को सहते रहे, फिर भी थके नहीं, झुके नहीं, रुके नहीं।

वाणी ने प्राप्त किया विद्यालय में प्रथम स्थान

नई दिल्ली, हमदर्द पब्लिक स्कूल दिल्ली की छात्रा कुमारी वाणी बंसल ने बारहवीं कक्षा की परीक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। बेस्ट फोर विषयों में उन्होंने सर्वाधिक 95.5 प्रतिशत तथा व्यापारिक अध्ययन में सौ में से 99, तथा अर्थ शास्त्र व एकाउंट्स विषयों में उन्होंने 95 अंक प्राप्त कर विद्यालय में सर्वाधिक अंकों का कीर्तिमान बनाया है। वाणी अभी चार्टर्ड अकाउंटेंसी की तैयारी कर रही है।

दीप प्रकाशन

(वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)

शांतिधर्मी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य के लिए व शांतिधर्मी की वार्षिक, आजीवन सदस्यता के लिए भी संपर्क कर सकते हैं।

दीपचन्द आर्य

मोबाईल-94161 94371

मिलने का स्थान-
आर्यसमाज घंटाघर, भिवानी

ओ३म्

M.A. : 9992025406
P. : 9728293962

NDA No. : 236964
DL No. : 2064

अशोका मैडिकल हॉल

अशोक कुमार आर्य Pharmacist, आयुर्वेद रत्न
R.M.P.M.B.M.S.

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया, शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज किया जाता है;

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-०५-२०१४ को प्रकाशित।

ओ३म्

आचार्य ज्ञानेश्वर जी १६ जून २०१४ को वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए गल्फ देशों में जा रहे हैं। वहाँ के आर्य सज्जनों ने पारिवारीक सत्संग तथा उपदेश के लिए आमंत्रित किया है। आचार्य जी अपनी अनुकूलता से उपदेश, प्रवचन, अध्यापन एवं शंका समाधान करेंगे।

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पो.सागपुर,
जि.साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

दूरभाष : (२७७०) २८७४१७, २६१५५५, ६४२७०५६५५०
Website : www.vaanaprastharojad.org
Email : vaanaprastharojad@gmail.com

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102

Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वेदिक दवाईयाँ
उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए।

Dr. S.P.Saini
(B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283
92552 68315

ओ३म्

ARYA PRATINIDHI SABHA AMERICA

(Congress of Arya Samajs in North America)

Invites you to

24th Arya Mahasammelan

An endeavor to Propagate Importance of Vedic Values in Society

Hosted by

Arya Samajs of Tri-State

At

Saddle Brook Marriott

138 New Pehle Avenue, Saddle Brook, NJ, 07663, (201) 843-9500
http://www.marriott.com/hotels/travel/ewrsb-saddle-brookmarriott/

31st July to 3rd August 2014

VEDAS: SOURCES OF SCIENCE, SPIRITUALITY AND HEALTHY LIVING

Enlightening spiritual discourses, group discussions, meditation sessions

Fun-filled learning sessions for the youth

Speakers:
Acharya Ashish Darshnacharya, Dr. Devbala Ramanathan,
Dr. Subhash Vedalankar, Dr. Balvir Acharya,
Acharya Vedshrami Vyakarnacharya,
Dr. Surya Nanda

For more details, please visit www.aryasamaj.com/ams

Conference Co-Chairs

Vijay Bhalla	Sati Gurdial	Jethinder Abbi
214-733-0363	718-380-1165	914-393-8268

Welcome Committee

Dr. Ramesh Gupta	Bhushan Verma	Vishrut Arya	Arya Pathik Girish Khosla	Vimal Velani
President	Past President	General Secretary	Trustee	Treasurer
201-602-7576	281-496-7904	404-954-0174	248-703-1549	732-422-1125

Enquiries: Email: mahasammelan@gmail.com Phone: 347-770-2792 Visit : www.aryasamaj.com/ams